



हरियाली अमावस्या प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त
करने का पर्व

-केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

मेरी खेती

सितम्बर 2026 | मूल्य: ₹49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 16
बागवानी फसलें	16 - 23
मशीनरी	24 - 42
कृषि सलाह	42 - 49
पशुपालन-पशुचारा	50 - 57
सम्पादकीय	58 - 60

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

सितंबर का महीना—खरीफ की देखभाल और रबी की तैयारी का समय

सितंबर का महीना भारतीय कृषि के लिए बदलाव और नई तैयारियों का महत्वपूर्ण समय होता है। इस महीने खेतों में खरीफ फसलें अपने विकास के महत्वपूर्ण चरण में होती हैं, वहीं किसान आने वाले रबी सीजन की योजना बनाना भी शुरू कर देते हैं। धान, मक्का, बाजरा, कपास, सोयाबीन और दलहनी फसलों की इस समय उचित देखभाल करना बेहतर उत्पादन के लिए आवश्यक है।

सितंबर में मौसम और वर्षा की स्थिति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अधिक नमी या लगातार बारिश से फसलों में कीट एवं रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। किसानों को नियमित रूप से खेत का निरीक्षण कर समय पर उचित कृषि सलाह अपनानी चाहिए। जल निकासी की व्यवस्था, खरपतवार नियंत्रण और आवश्यकता के अनुसार पोषक तत्वों का प्रबंधन भी इस समय बेहद महत्वपूर्ण है।

यह महीना रबी फसलों की तैयारी के लिए भी उपयुक्त है। किसान मिट्टी परीक्षण, उन्नत बीजों के चयन और आवश्यक कृषि संसाधनों की योजना बनाकर आगामी सीजन के लिए बेहतर शुरुआत कर सकते हैं।

खेती आज केवल मेहनत का कार्य नहीं, बल्कि सही जानकारी, आधुनिक तकनीक और समय पर निर्णय लेने का माध्यम भी बन चुकी है। सितंबर हमें यही संदेश देता है कि वर्तमान फसल की सावधानीपूर्वक देखभाल के साथ भविष्य की तैयारी भी जरूरी है। सही योजना और वैज्ञानिक खेती अपनाकर किसान उत्पादन और आय, दोनों को बेहतर बना सकते हैं।



श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल



श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक



कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीकेली



डॉ. एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर



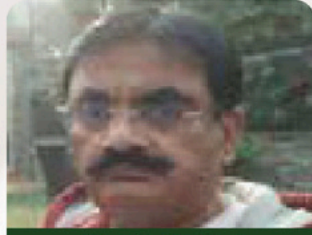
प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटर्नरी विश्व विद्यालय,
मथुरा



डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटर्नरी एंड एनिमल साइंस



डॉ. हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय



डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश



डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान



डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा



डॉ. एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार



डॉ. रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)



डॉ. सी बी सिंह
एक्स - सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा



तेजपाल सिंह
प्रगतिसील किसान

मूंग की खेती कैसे करें: जानें प्रमुख रोग एवं कीट नियंत्रण के उपाय

मेरिक्हेटी

खेत खलिहान

मूंग की खेती जानें प्रमुख रोग एवं कीट नियंत्रण के उपाय



मूंग की खेती कैसे करें - जानें, खेती की पूरी जानकारी

मूंग की फसल (mung ki kheti) के लिए गर्म और अपेक्षाकृत शुष्क जलवायु उपयुक्त मानी जाती है। इसके बेहतर विकास के लिए करीब 25 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है, जबकि यह फसल लगभग 20 से 40 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान को सहन कर सकती है। मिट्टी का pH मान 7.0 से 7.5 के आसपास रखना मूंग की खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है। मूंग की अच्छी फसल के लिए खेत की तैयारी अच्छी तरह करना जरूरी है। खेत में सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से एक गहरी जुताई करनी चाहिए, ताकि मिट्टी की ऊपरी परत के साथ-साथ नीचे की परत भी अच्छी तरह खुल सके और खेत में मौजूद खरपतवार एवं अवशेष नियंत्रित हो सकें। इसके बाद 2 से 3 बार कल्टीवेटर या देसी हल से जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी और बारीक कर लेना चाहिए। अंतिम जुताई के बाद सुहागा चलाकर

खेत को अच्छी तरह समतल कर दें। समतल और भुरभुरी मिट्टी में बीज की गहराई समान रखने में तथा पौधों के एकसमान अंकुरण में मदद मिलती है। साथ ही, खेत में पानी के उचित निकास की व्यवस्था पहले से कर लेना चाहिए, खासकर उन क्षेत्रों में जहां बारिश के दौरान जलभराव की समस्या रहती है। मूंग की बुवाई के लिए लगभग 8 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की दर का उपयोग किया जा सकता है।

मूंग की फसल में प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन: लक्षण और बचाव के उपाय

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है, लेकिन अन्य दलहनी फसलों की तरह इसमें भी कई प्रकार के कीट और रोगों का प्रकोप देखने को मिलता है। यदि इनकी पहचान शुरुआती अवस्था में नहीं की जाए और समय पर नियंत्रण उपाय न अपनाए जाएं, तो पौधों की वृद्धि, फूल-फलियों का विकास और दानों की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। खासकर कम वर्षा या सिंचाई

की सीमित सुविधा वाले क्षेत्रों में फसल पर कुछ कीटों का प्रकोप अधिक दिखाई दे सकता है। इसलिए मूंग की खेती में नियमित खेत निरीक्षण, स्वस्थ बीज, रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चयन और आवश्यकता के अनुसार कीट एवं रोग नियंत्रण पर ध्यान देना जरूरी है। मूंग की फसल सामान्यतः कम पानी में भी उगाई जा सकती है और वर्षा आधारित क्षेत्रों में भी इसकी खेती की जाती है। हालांकि, पर्याप्त नमी की कमी, कमजोर पौध वृद्धि या खेत में अनुकूल परिस्थितियां होने पर कीट एवं रोग तेजी से नुकसान पहुंचा सकते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) भी मूंग में येलो मोजेक, सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट, पाउडरी मिल्ड्यू और विभिन्न कीटों को महत्वपूर्ण उत्पादन बाधाओं में शामिल करता है।

मूंग की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट

1. दीमक से मूंग की फसल को बचाएं

कम नमी वाले और वर्षा की कमी वाले क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप अधिक देखने को मिल सकता है। दीमक मुख्य रूप से पौधों की जड़ों और भूमिगत हिस्सों को नुकसान पहुंचाती है। शुरुआती अवस्था में इसका प्रकोप होने पर पौधे कमजोर पड़ सकते हैं, मुरझाने लगते हैं और गंभीर स्थिति में पौधे सूख भी सकते हैं। दीमक के कारण खेत में पौधों की संख्या कम होने से सीधे तौर पर उत्पादन प्रभावित हो सकता है। आपकी दी गई सिफारिश के अनुसार, अंतिम जुताई के समय क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत या क्लोरोपाइरीफॉस पाउडर की 20-25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर मिट्टी में मिलाने का उल्लेख है। साथ ही, बुवाई के समय क्लोरोपाइरीफॉस की 2 मिलीलीटर मात्रा प्रति किलोग्राम बीज से बीज उपचार की जानकारी दी गई है। इन रसायनों का प्रयोग करने से पहले वर्तमान सरकारी पंजीकरण और आपके क्षेत्र में मूंग के लिए स्वीकृत लेबल क्लेम की पुष्टि करना जरूरी है।

2. फली भेदक कीट

फली भेदक मूंग की फसल के लिए नुकसानदायक

कीटों में शामिल है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इसकी इल्ली फलियों में छेद करके अंदर पहुंच सकती है और विकसित हो रहे दानों को नुकसान पहुंचाती है। इसका प्रकोप बढ़ने पर फलियों में दाने कम विकसित होते हैं और उपज में कमी आ सकती है। इसलिए फूल आने और फली बनने की अवस्था में खेत की नियमित निगरानी करना बेहद जरूरी है। दी गई जानकारी के अनुसार, फली भेदक कीट के नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 25 EC की 1.25 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव की सिफारिश की गई है। हालांकि, रसायन का प्रयोग केवल वर्तमान स्वीकृत लेबल क्लेम और स्थानीय कृषि विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार करें।

3. कट्टा या कतरा कीट

कट्टा या कतरा कीट विशेष रूप से दलहनी फसलों में नुकसान पहुंचाने वाला कीट है। इसकी इल्ली शुरुआती अवस्था में पौधों को जमीन के पास से काट देती है। ये इल्लियां दिन के समय अक्सर खेत की मेड़ों, घास या मिट्टी के नीचे छिपी रहती हैं और रात के समय बाहर निकलकर पौधों को नुकसान पहुंचाती हैं। यदि अंकुरण के तुरंत बाद इसका प्रकोप हो जाए, तो खेत में पौधों की संख्या तेजी से कम हो सकती है।

इसके प्रबंधन के लिए खेत के आसपास घास-फूस, कचरा और अनावश्यक वनस्पति को साफ रखना जरूरी है। दी गई जानकारी के अनुसार, कतरे की इल्लियों के नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत पाउडर की 20-25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर भुरकाव करने की जानकारी दी गई है। विशेष रूप से खेत की मेड़ों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि कीट दिन में इन स्थानों पर छिप सकते हैं।

4. रस चूसक कीट

रस चूसने वाले कीट पौधों के कोमल हिस्सों और फलियों से रस चूसकर फसल को कमजोर कर सकते हैं। इनके प्रकोप से पौधों की सामान्य वृद्धि प्रभावित



MASSEY FERGUSON



**MASTER OF
PUDDLING**

7052 L



SPLASH PROTECT FENDER

FULLY SEALED 4WD FRONT AXLE

**20% LESSER WEIGHT COMPARED TO
TRADITIONAL 4WD TRACTORS**

होती है और अधिक प्रकोप की स्थिति में फूल एवं फलियों के विकास पर भी असर पड़ सकता है। इसलिए पौधों की नई पत्तियों और कोमल हिस्सों पर नियमित रूप से कीटों की उपस्थिति की जांच करनी चाहिए। आपकी दी गई सामग्री में इसके नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 25 EC की 1.5 लीटर तथा डाइमिथोएट 30 EC की 800 मिलीलीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की जानकारी दी गई है। इन उत्पादों का इस्तेमाल करने से पहले मूंग में उनके वर्तमान पंजीकरण और लेबल क्लेम की पुष्टि करें।

5. सफेद मक्खी और हरा तेला

सफेद मक्खी और हरा तेला मूंग की फसल में महत्वपूर्ण रसचूसक कीट हैं। ये पौधों से रस चूसकर उन्हें कमजोर करते हैं। सफेद मक्खी की भूमिका मूंग के पीले मोजेक रोग के प्रसार में भी महत्वपूर्ण है। इसलिए इन कीटों का प्रबंधन केवल सीधे होने वाले नुकसान को कम करने के लिए ही नहीं, बल्कि वायरस जनित रोगों के प्रसार को रोकने के लिए भी महत्वपूर्ण है। आपकी मूल सामग्री में मोनोक्रोटोफॉस 36 WSC या मिथाइल डिमेटान 25 EC की 1.25 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव का उल्लेख है। हालांकि, इन पुराने रसायनों का उपयोग करने से पहले वर्तमान पंजीकरण और फसल-विशिष्ट स्वीकृति अवश्य जांचें तथा स्थानीय कृषि विभाग की सलाह को प्राथमिकता दें।

6. पत्ती बीटल

पत्ती बीटल मूंग की पत्तियों को खाकर नुकसान पहुंचाता है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों में छेद दिखाई देने लगते हैं और पौधे की प्रकाश संश्लेषण क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसका असर पौधों की वृद्धि और आगे चलकर उत्पादन पर भी पड़ सकता है। खेत में शुरुआती अवस्था से ही पत्तियों की नियमित जांच करने से इस कीट की पहचान समय पर की जा सकती है। दी गई जानकारी के अनुसार इसके नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत

पाउडर की 20-25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर भुरकाव करने का उल्लेख है। किसी भी रसायन का इस्तेमाल करने से पहले वर्तमान अनुशंसित मात्रा और सुरक्षा निर्देशों की पुष्टि जरूर करें।

मूंग की फसल के प्रमुख रोग और उनका प्रबंधन

1. पीला मोजेक रोग

पीला मोजेक मूंग की सबसे महत्वपूर्ण बीमारियों में से एक है। यह विषाणु जनित रोग है और इसका प्रसार मुख्य रूप से सफेद मक्खी के माध्यम से होता है। संक्रमित पौधों की पत्तियों पर शुरुआत में पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। रोग बढ़ने के साथ पत्तियों का बड़ा हिस्सा पीला पड़ सकता है और पौधों की वृद्धि प्रभावित होने लगती है। गंभीर संक्रमण में फलियों और दानों पर भी असर दिखाई दे सकता है, जिससे उत्पादन में काफी कमी आ सकती है। पीला मोजेक वायरस से बचाव के लिए रोग प्रतिरोधी या सहनशील किस्मों का चयन सबसे महत्वपूर्ण उपायों में से एक है। आपकी दी गई जानकारी में टी.जे.एम.-3, K-851, पंत मूंग-2, पूसा विशाल और HUM-1 जैसी किस्मों का उल्लेख है। हालांकि, किस्म का चुनाव क्षेत्र और उपलब्ध नवीनतम कृषि सिफारिशों के अनुसार करें। ICAR के अनुसार भी मूंग में येलो मोजेक के प्रति प्रतिरोधी स्रोत और किस्मों का विकास महत्वपूर्ण प्रबंधन रणनीति है। यदि खेत में शुरुआती अवस्था में संक्रमित पौधे दिखाई दें, तो उन्हें उखाड़कर खेत से बाहर नष्ट करना चाहिए। साथ ही सफेद मक्खी की निगरानी और नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि यही रोग के प्रसार का प्रमुख माध्यम है।

2. श्याम वर्ण रोग

श्याम वर्ण रोग मूंग की फसल को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। अनुकूल मौसम, बादल छाए रहने और अधिक नमी जैसी परिस्थितियों में इसका प्रकोप बढ़ सकता है। रोग के लक्षण पत्तियों पर गहरे रंग के धब्बों के रूप में दिखाई दे सकते हैं। संक्रमण बढ़ने पर

पत्तियों में छेद बनने, पत्तियों के झड़ने और तने पर गहरे घाव दिखाई देने जैसी समस्याएं सामने आ सकती हैं। गंभीर स्थिति में प्रभावित पौधे कमजोर होकर सूख सकते हैं।

रोग की रोकथाम के लिए आपकी दी गई जानकारी में बुवाई से पहले बीज उपचार तथा रोग के लक्षण दिखाई देने पर जिनेब या थीरम का 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करने का उल्लेख है। इसके अलावा कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेब के छिड़काव की भी जानकारी दी गई है। फफूंदनाशी का चयन और मात्रा वर्तमान फसल-विशिष्ट अनुशंसा के अनुसार ही करें।

3. चूर्णी फफूंद रोग

चूर्णी फफूंद रोग गर्म और शुष्क वातावरण में मूंग की फसल को प्रभावित कर सकता है। इस रोग में पत्तियों पर सफेद या धूल जैसे फफूंद के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। संक्रमण बढ़ने के साथ पत्तियों का बड़ा हिस्सा प्रभावित हो सकता है और रोग तने तक भी फैल सकता है। अधिक प्रकोप होने पर पौधे कमजोर पड़ते हैं और उनकी उत्पादकता प्रभावित होती है।

रोग के शुरुआती लक्षण दिखाई देते ही नियंत्रण उपाय शुरू करना जरूरी है। आपकी दी गई जानकारी के अनुसार कार्बेन्डाजिम या केराथेन के घोल का छिड़काव किया जा सकता है और आवश्यकता के अनुसार 15-20 दिन के अंतराल पर दोहराया जा सकता है। हालांकि, छिड़काव की संख्या और अंतराल रोग की स्थिति तथा संबंधित उत्पाद के वर्तमान लेबल निर्देशों के अनुसार तय करना चाहिए।

4. सर्कोस्पोरा पर्णदाग रोग

सर्कोस्पोरा पर्णदाग (Cercosporin leaf spot) मूंग का एक महत्वपूर्ण फफूंद रोग है। यह विशेष रूप से ऐसी परिस्थितियों में बढ़ सकता है जहां तापमान अनुकूल हो, लगातार बारिश हो या वातावरण में नमी अधिक बनी रहे। इस रोग में पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं, जिनके आसपास लाल या गहरे रंग की सीमा हो सकती है। रोग का प्रकोप बढ़ने पर धब्बे

पत्तियों के अलावा शाखाओं और तने पर भी दिखाई दे सकते हैं।

इसके प्रबंधन के लिए खेत में संक्रमित पौधों और फसल अवशेषों को हटाकर नष्ट करना तथा खेत की स्वच्छता बनाए रखना जरूरी है। बुवाई से पहले कैप्टान या थीरम से बीज उपचार करने की जानकारी दी गई है। इसके अलावा मेनकोजेब 75 WP और कार्बेन्डाजिम 50 WP के घोल का छिड़काव भी प्रबंधन के लिए बताया गया है। ICAR की वर्तमान सलाह में भी सर्कोस्पोरा प्रबंधन के लिए फफूंदनाशी आधारित उपचार का उल्लेख मिलता है।

5. लीफ कर्ल रोग

लीफ कर्ल एक विषाणु जनित रोग है, जिसमें मूंग के पौधों की पत्तियों में असामान्य सिकुड़न और झुर्रियां दिखाई देने लगती हैं। कई बार पत्तियां सामान्य आकार से अधिक बड़ी और विकृत दिखाई दे सकती हैं। रोग का असर पौधे की सामान्य वृद्धि पर पड़ता है और संक्रमित पौधों में फलियों की संख्या कम हो सकती है। इसके लक्षण बुवाई के करीब 4-5 सप्ताह के भीतर भी दिखाई दे सकते हैं। लीफ कर्ल के प्रबंधन के लिए आपकी दी गई सामग्री में बुवाई से पहले इमिडाक्लोप्रिड से बीज उपचार तथा बुवाई के लगभग 15 दिन बाद इमिडाक्लोप्रिड के घोल का छिड़काव करने की जानकारी दी गई है। हालांकि, ICAR की 2025 खरीफ सलाह में मूंग के लीफ क्रिंकल के लिए थायमेथोक्साम 70 WS से बीज उपचार और थायमेथोक्साम 25 WG के छिड़काव का उल्लेख है। इसलिए वर्तमान क्षेत्र-विशिष्ट कृषि सलाह और संबंधित उत्पाद के लेबल के अनुसार ही रसायन का चयन करें।

मूंग में कीट एवं रोग नियंत्रण के लिए अपनाएं एकीकृत प्रबंधन

मूंग की फसल को कीटों और रोगों से बचाने के लिए केवल रासायनिक दवाओं पर निर्भर रहने के बजाय एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM) अपनाना

अधिक प्रभावी तरीका है। सबसे पहले खेत में स्वस्थ और प्रमाणित बीज का इस्तेमाल करें तथा क्षेत्र के लिए उपयुक्त रोग-सहनशील या रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव करें। बुवाई से पहले बीज उपचार करें, खेत को साफ रखें और संक्रमित पौधों को समय रहते हटाएं। फसल की नियमित निगरानी करके कीटों और रोगों की शुरुआती अवस्था में पहचान करें। ICAR द्वारा विकसित सामग्री भी मूंग में रोग-प्रतिरोधी किस्मों के उपयोग को महत्वपूर्ण मानती है; कई संस्थानों ने पीला मोजेक, सर्कोस्पोरा और अन्य प्रमुख रोगों के प्रति बेहतर प्रतिरोध वाली मूंग की किस्मों की पहचान की है।

ककोड़ा की खेती कैसे करें: जानें खेती का सही तरीका, होगा अधिक मुनाफा



ककोड़ा की खेती कैसे करें

ककोड़ा, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में खेखसा भी कहा जाता है, कद्दू वर्गीय एक बहुवर्षीय लता है। यह पौधा भारत के जंगलों, पहाड़ी इलाकों और शुष्क क्षेत्रों में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। इसकी खासियत यह है कि यह बिना विशेष देखभाल और प्रबंधन के भी अच्छी उपज देता है। यही कारण है कि इसे अर्ध-पारंपरिक और वाणिज्यिक खेती, दोनों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

kakoda ki kheti, किसानों के लिए आय का अच्छा स्रोत हो सकती है। इस फसल का एक और विशेष गुण यह है कि इसके मादा पौधों से लगातार 8-10 वर्षों तक उपज मिलती रहती है। यानी एक बार पौधे की स्थापना कर देने के बाद लंबे समय तक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके फल का प्रयोग सब्जी, अचार और विभिन्न औषधीय उत्पादों के निर्माण में किया जाता है।

ककोड़ा के औषधीय गुण

ककोड़ा केवल खाद्य फसल ही नहीं, बल्कि एक औषधीय पौधा भी है। आयुर्वेद में इसके अनेक चिकित्सीय उपयोग बताए गए हैं।

- यह कफ, खांसी, पाचन संबंधी विकार, वात-पित्त संतुलन और हृदय रोगों में लाभकारी माना जाता है।
- इसकी जड़ें बवासीर, मूत्र विकार और बुखार के उपचार में उपयोगी होती हैं।
- मधुमेह के रोगियों के लिए यह फायदेमंद है क्योंकि यह रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती है।
- यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है।
- इसकी पत्तियां और फल दोनों ही औषधीय उपयोग के लिए काम आते हैं, इसलिए इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

ककोड़ा की खेती का आर्थिक महत्व

ककोड़ा की बाजार में अच्छी मांग रहती है। ताजे फलों की कीमत लगभग ₹90-100 प्रति किलोग्राम तक मिलती है। यदि किसान इसके फलों का प्रसंस्करण (processing) कर सुखाए हुए फल, अचार, या अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद बनाएं तो इसकी कीमत और भी अधिक मिल सकती है। कम लागत और कम देखभाल में उच्च लाभ देने वाली यह फसल किसानों को पारंपरिक फसलों का एक मजबूत विकल्प प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में

इसकी संगठित खेती और प्रोसेसिंग से किसान अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं।

ककोड़ा की खेती में अनुकूल जलवायु और मिट्टी

- ककोड़ा गर्म और आर्द्र (नमी वाली) जलवायु में बेहतर उत्पादन देता है।
- इसे 1500-2500 मिमी वर्षा और 20-30°C तापमान वाले क्षेत्र अनुकूल लगते हैं।
- अच्छी जल निकासी वाली, कार्बनिक पदार्थों से भरपूर रेतीली-दोमट मिट्टी इसकी वृद्धि के लिए सबसे उपयुक्त होती है।
- मिट्टी का pH 6.0-7.0 होना चाहिए। अधिक अम्लीय मिट्टी पौधों की वृद्धि को प्रभावित कर सकती है।

ककोड़ा की बुवाई का समय एवं विधि

- ककोड़ा की बुवाई का सर्वोत्तम समय जून से जुलाई तक होता है।
- इसकी खेती बीज एवं वानस्पतिक (root tuber) दोनों विधियों से की जाती है, परंतु जड़ कंद से प्रवर्धन अधिक सफल और उच्च उपज देने वाला होता है।
- पौधों को 2×2 मीटर की दूरी पर रोपित किया जाता है।
- प्रत्येक 4×4 मीटर क्षेत्र में 1 नर पौधा और 8 मादा पौधे लगाने से परागण एवं उत्पादन दोनों बेहतर होते हैं।

ककोड़ा की उन्नत किस्में

भारत में विकसित की गई कुछ ककोड़ा की उन्नत किस्में इस प्रकार हैं:

- इंदिरा कंकोड़-1
- अम्बिका-12-1
- अम्बिका-12-2
- अम्बिका-12-3

ककोड़ा की उन्नत किस्में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक

रखती हैं और वाणिज्यिक खेती के लिए उपयुक्त हैं।

बीज मात्रा

- अच्छे अंकुरण (70-80%) वाले बीज का चयन जरूरी है।
- सामान्यतः 8-10 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त माना जाता है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

अंतिम जुताई के समय प्रति हेक्टेयर 200-250 क्विंटल गोबर की खाद डालना लाभकारी है।

इसके अतिरिक्त रासायनिक उर्वरकों की मात्रा इस प्रकार रखी जाती है:

यूरिया – 65 किलोग्राम

सिंगल सुपर फॉस्फेट (SSP) – 375 किलोग्राम

म्यूरेट ऑफ पोटाश (MOP) – 67 किलोग्राम

सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण

- बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
- बरसात में अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, परंतु लंबे समय तक सूखे की स्थिति में सिंचाई आवश्यक है।
- जलभराव से बचाने के लिए खेत में उत्तम जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- 2-3 बार निराई-गुड़ाई कर खरपतवार को नियंत्रित किया जा सकता है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

ककोड़ा पर सामान्यतः रोगों का प्रभाव कम देखा जाता है, लेकिन फल मक्खी हानिकारक साबित हो सकती है। इसके नियंत्रण हेतु – इमिडाक्लोप्रिड या क्विनालफॉस 25 ईसी की 2-3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जाता है।

पौधों को सहारा देना (स्टेकिंग)

- बेहतर फलन और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए पौधों को सहारा देना आवश्यक है। इसके लिए

लगे हटके करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी

50 HP श्रेणी



बांस, सूखी लकड़ी या लोहे के एंगल का प्रयोग कर जालीनुमा संरचना बनाई जाती है।

- यह संरचना 5-6 फीट ऊंची और लगभग 4 फीट चौड़ी होनी चाहिए, ताकि बेलें आसानी से फैल सकें और भरपूर उत्पादन दे सकें।

निष्कर्ष

ककोड़ा की खेती किसानों के लिए एक कम लागत, लंबी अवधि और अधिक मुनाफा देने वाला विकल्प है। यह केवल खाद्य और पोषण संबंधी महत्व ही नहीं रखता, बल्कि औषधीय गुणों के कारण इसकी मांग बाजार में लगातार बनी रहती है। यदि इसकी संगठित खेती, प्रसंस्करण और विपणन प्रणाली विकसित की जाए तो यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और किसानों की आय दोगुनी करने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग लक्षण और प्रबंधन के उपाय



अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग

अंगूर के बाग में कीटों के साथ साथ रोगों का भी प्रकोप होता है। रोगों के कारण अंगूर की उपज में काफी हद तक कमी आती है। अंगूर की बीमारियों मुख्य रूप से

मौसम की स्थिति, इनोकुलम (बीमारी का इतिहास) की उपस्थिति और बेलों की संवेदनशीलता पर निर्भर करती है। इसका मतलब है कि एक बीमारी एक साल में विनाशकारी हो सकती है। इस लेख में हम आपको अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग, लक्षण और प्रबंधन के उपाय के बारे में जानकारी देंगे।

डाउन मिल्ड्यू (Downy Mildew): *Plasmopara viticola*

लक्षण:

रोग से प्रभावित पत्तियों की ऊपरी सतह पर अनियमित, पीले, पारदर्शी धब्बे दिखाई देते हैं। इसके अनुरूप, निचली सतह पर सफेद, पाउडर जैसा फफूंदीयुक्त विकास देखा जाता है। प्रभावित पत्तियाँ पीली होकर भूरी पड़ जाती हैं और सूख जाती हैं। समय से पहले पत्तों का गिरना (defoliation) होता है। कोमल शाखाओं का रुक जाना या बौना रह जाना। तनों पर भूरे और गहरे धंसे हुए धब्बे बनते हैं। बेरी (फलियों) पर सफेद फफूंदी दिखाई देती है, जो बाद में चमड़े जैसी होकर सिकुड़ जाती है। यदि बाद में संक्रमण होता है तो फलों में सड़न दिखाई देती है, लेकिन फल की त्वचा फटती नहीं है।

प्रबंधन:

- इस रोग से रोकथाम के लिए बोर्डो मिश्रण 1% या मेटालेक्सिल + मैकोजेब 0.4% का छिड़काव करें।
- रोग से प्रभावित भागों को काट कर मिट्टी में दबा दें।

पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew): *Uncinula necator*

लक्षण

पत्तियों की ऊपरी सतह पर सफेद चूर्ण जैसा फफूंद विकसित होता है। पत्तियों का आकार बिगड़ जाता है और रंग बदल जाता है। तना गहरा भूरा हो जाता है।

फूलों पर संक्रमण होने से फूल झड़ जाते हैं और फल कम बनते हैं।

यदि शुरुआती अवस्था में बेरी संक्रमित होती है तो वह झड़ जाती है। पुराने फलों पर चूर्ण जैसा विकास साफ दिखाई देता है और संक्रमण के कारण फल की त्वचा फट जाती है।

प्रबंधन:

इस रोग से बचाव के लिए इनऑर्गेनिक सल्फर 0.25% या किनोमेथियोनेट 0.1% या डाइनोकैप 0.05% का छिड़काव करें।

**एन्थ्रेक्नोज
ampelophagum**

Gloeosporium

लक्षण:

यह रोग सबसे पहले फलों पर गहरे लाल धब्बों के रूप में दिखाई देता है। बाद में ये धब्बे गोलाकार, धंसे हुए, राख जैसे भूरे हो जाते हैं और उनके चारों ओर गहरे रंग की सीमा बन जाती है, जिससे यह “बर्ड्स-आई रॉट” जैसा प्रतीत होता है। धब्बों का आकार 1/4 इंच से लेकर फल के आधे हिस्से तक हो सकता है। यह फफूंद तने, टेंड्रिल, पत्तियों की नसों और डंठलों को भी प्रभावित करती है। युवा तनों पर कई धब्बे दिखाई देते हैं जो आपस में मिलकर तने को घेर लेते हैं और उसका ऊपरी भाग मर जाता है। पत्तियों और डंठलों पर धब्बों के कारण वे मुड़ जाते हैं या विकृत हो जाते हैं।

इन रोगों का प्रमुख प्रभाव अंगूर की उपज और गुणवत्ता पर पड़ता है। विशेषकर यदि रोग का प्रारंभिक अवस्था में पता न लगाया जाए, तो यह पूरी फसल को नुकसान पहुँचा सकता है।

डाउन मिल्ड्यू नम और आद्र जलवायु में तेजी से फैलता है जबकि पाउडरी मिल्ड्यू शुष्क और गर्म परिस्थितियों में सक्रिय होता है। बर्ड्स-आई स्पॉट विशेष रूप से गीले मौसम में अधिक फैलता है।

समय-समय पर बाग की निगरानी, रोगग्रस्त भागों को काटकर हटाना, रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना और उचित छिड़काव कार्यक्रम अपनाना बहुत आवश्यक है।

जैविक विकल्पों में नीम आधारित उत्पाद या ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशी का भी उपयोग किया जा सकता है। रासायनिक दवाओं का प्रयोग करते समय उनके अनुशंसित मात्रा और छिड़काव के समय का पालन अवश्य करें, ताकि फसल और पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहें।

पूसा बासमती 1882: सूखे में भी बेहतरीन उत्पादन देने वाली भारत की पहली सूखा-सहिष्णु बासमती किस्म



देश में बदलते मौसम, अनियमित मानसून और लगातार गिरते भूजल स्तर ने धान उत्पादक किसानों के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। विशेष रूप से बासमती धान की खेती करने वाले किसान पानी की कमी के कारण उत्पादन में गिरावट और आर्थिक नुकसान का सामना कर रहे हैं। ऐसे कठिन समय में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), पूसा द्वारा विकसित पूसा बासमती 1882 किसानों के लिए एक नई उम्मीद बनकर सामने आई है।

यह भारत की पहली मास-व्युत्पन्न (MAS-Derived) सूखा-सहिष्णु बासमती धान की किस्म है, जिसे खासतौर पर उन क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है, जहां बासमती धान की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और समय-समय पर सूखे जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं।

पूसा बासमती 1882 की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किस्म पानी की कमी या सूखे की स्थिति में भी अपनी उत्पादन क्षमता को काफी हद तक बनाए रखती है। इसके साथ ही, यदि इसे सामान्य सिंचित परिस्थितियों में उगाया जाए, तो यह किसानों को अधिक उपज प्रदान करने की क्षमता रखती है। इसी वजह से इसे वर्ष 2022 में केंद्रीय किस्म विमोचन समिति द्वारा अधिसूचित किया गया, जिसके बाद यह तेजी से किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही है।

इन राज्यों के किसानों के लिए उपयुक्त है यह किस्म

पूसा बासमती 1882 को मुख्य रूप से उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत के पारंपरिक बासमती उत्पादक क्षेत्रों के लिए विकसित और अनुशंसित किया गया है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बासमती उगाने वाले किसान इस किस्म की खेती करके बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इन क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों ने इस किस्म को विकसित किया है, ताकि किसान बदलते मौसम की परिस्थितियों में भी अपनी फसल की उत्पादकता बनाए रख सकें।

कम समय में तैयार होने वाली अधिक उत्पादन देने वाली किस्म

पूसा बासमती 1882 खरीफ सीजन की एक उन्नत बासमती किस्म है, जो औसतन 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी सामान्य औसत उपज लगभग 46.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों, उचित पोषण प्रबंधन और समय पर सिंचाई के साथ यह किस्म 59.7 क्विंटल प्रति

हेक्टेयर तक उत्पादन देने की क्षमता रखती है। यह किस्म मुख्य रूप से सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए तैयार की गई है, लेकिन अचानक पानी की कमी होने पर भी इसकी उत्पादन क्षमता अन्य सामान्य बासमती किस्मों की तुलना में काफी बेहतर रहती है।

आधुनिक तकनीक से विकसित की गई है यह बासमती किस्म

पूसा बासमती 1882, लोकप्रिय बासमती किस्म पूसा बासमती 1 का ही एक उन्नत और आधुनिक संस्करण है। इसे विकसित करने के लिए वैज्ञानिकों ने आधुनिक प्रजनन तकनीकों का उपयोग करते हुए इसमें qDTY 1.1 नामक विशेष क्यूटीएल (QTL) जीन को शामिल किया है। यह जीन पौधे को विशेष रूप से उस समय सूखे का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है, जब फसल अपने प्रजनन चरण में होती है और उसमें बालियां निकल रही होती हैं। सामान्यतः यही वह अवस्था होती है, जब पानी की कमी होने पर धान की उपज पर सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सूखे में लगभग दोगुनी उपज देने की क्षमता

इस किस्म की प्रभावशीलता को जांचने के लिए वैज्ञानिकों ने कृत्रिम सूखे की स्थिति वाले रेन आउट शेल्टर में इसका परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान पारंपरिक पूसा बासमती 1 की औसत उपज केवल 496 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर दर्ज की गई, जबकि नई पूसा बासमती 1882 ने लगभग 987.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की शानदार औसत उपज दी। यह परिणाम दर्शाता है कि यह किस्म सूखे की परिस्थितियों में भी लगभग दोगुनी उपज देने की क्षमता रखती है। यही कारण है कि इसे जलवायु परिवर्तन के दौर में बासमती किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि माना जा रहा है।

सामान्य परिस्थितियों में भी अधिक उत्पादन

पूसा बासमती 1882 केवल सूखे की स्थिति में ही बेहतर प्रदर्शन नहीं करती, बल्कि सामान्य सिंचित परिस्थितियों में भी यह अपनी मूल किस्म पूसा बासमती 1 की तुलना में लगभग 10.26 प्रतिशत अधिक उत्पादन देती है। इसका मतलब यह है कि जिन किसानों के पास पर्याप्त सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वे भी इस किस्म को अपनाकर अधिक उत्पादन और बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

किसानों के लिए क्यों फायदेमंद है पूसा बासमती 1882?

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, अनिश्चित वर्षा और लगातार घटते भूजल स्तर को देखते हुए पूसा बासमती 1882 किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यदि फसल के दौरान अचानक पानी की कमी हो जाती है, तब भी यह किस्म अपनी उत्पादन क्षमता को बनाए रखने में सक्षम रहती है, जिससे किसानों की लागत डूबने की संभावना कम हो जाती है।

कम समय में तैयार होने, कम पानी में भी बेहतर प्रदर्शन करने और अधिक उपज देने की क्षमता के कारण यह किस्म बासमती उत्पादकों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यही वजह है कि पूसा बासमती 1882 को आने वाले वर्षों में बासमती खेती के लिए एक टिकाऊ, लाभकारी और जलवायु-अनुकूल विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

भारत में सिसल की खेती की विस्तृत जानकारी



सिसल एक शुष्क जलवायु में उगाया जाने वाला पत्ती रेशा उत्पादक पौधा है, जिसकी पत्तियाँ मोटी, लंबी (1 से 1.5 मीटर), और रसीली होती हैं। इनकी सतह पर एक मोमयुक्त परत होती है, जिससे यह मरूद्धिद (xerophytic) पौधों की श्रेणी में आता है। एक स्वस्थ सिसल पौधा अपने औसतन 10-12 वर्षों के जीवनकाल में 200-250 पत्तियाँ देता है। इससे निकाला गया रेशा रस्सी, सुतली, कार्पेट बैकिंग, ब्रश और अन्य औद्योगिक उत्पादों में उपयोग किया जाता है।

उपयुक्त जलवायु:

सिसल अधिक तापमान सहन कर सकता है और 50°C तक जीवित रह सकता है। इसके लिए 60-125 सेमी वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त हैं। हालांकि, इसकी आदर्श वृद्धि 10°C से 32°C के तापमान में होती है। ओलावृष्टि से इसकी पत्तियाँ और रेशा क्षतिग्रस्त हो सकते हैं।

भूमि की आवश्यकता:

WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort



3630TX Plus+
Special Edition

सिसल को हल्की, रेतीली-दोमट और चूना युक्त मृदा पसंद होती है। जल निकासी वाली भूमि इसके लिए सर्वोत्तम होती है, जबकि भारी और जलभराव वाली जमीन इससे नुकसान पहुंचाती है। मृदा में कैल्शियम की उपस्थिति जड़ों के विकास को प्रोत्साहित करती है। लाल मिट्टी और चूना पत्थर वाली भूमि में रेशा उत्पादन अच्छा देखा गया है।

रोपण सामग्री:

भारत में सिसल फूल नहीं देता, अतः इसका प्रचार मुख्यतः बुलबिल और सकर्स से किया जाता है। एक पौधा 400-800 बुलबिल उत्पन्न कर सकता है। इन्हें फरवरी से अप्रैल तक नर्सरी में लगाया जाता है। "कायिक भ्रूणजनन" तकनीक के प्रयोग से 95% तक पौधों की जीवित रहने की संभावना होती है, जिससे रोपण दर बेहतर होती है।

नर्सरी प्रबंधन:

प्राथमिक और माध्यमिक दो चरणों में नर्सरी तैयार की जाती है। प्राथमिक नर्सरी में पौधों को 10×7 सेमी दूरी पर लगाया जाता है। माध्यमिक नर्सरी में 50×25 सेमी दूरी के साथ फफूंदनाशक उपचार कर रोपण किया जाता है। हर 11वीं पंक्ति कार्य सुविधा हेतु खाली रखी जाती है।

मुख्य खेत में रोपण:

रोपण से पहले रोपण सामग्री को 30-45 दिन छाया में रखा जा सकता है। गर्मियों में 1 घन फीट गड्ढों में जैविक खाद और चूने के साथ रोपण किया जाता है। दो पंक्ति रोपण विधियाँ अपनाई जाती हैं—कम और उच्च घनत्व वाली। उच्च घनत्व रोपण में 6666 पौधे/हेक्टेयर, जबकि कम घनत्व में 4000 पौधे/हेक्टेयर लगाए जाते हैं।

अंतरवर्ती फसलें और मल्टिपिंग:

पहले तीन वर्षों में फसल नहीं मिलती, इसलिए अंतरवर्ती फसल जैसे लोबिया, मटर, सफेद मूसली,

एलोवेरा या लेमन ग्रास उगाई जा सकती है। मल्टिपिंग से नमी संरक्षित रहती है और मृदा उर्वरता में सुधार होता है।

खरपतवार नियंत्रण:

पहले 45 दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। मेटोलाक्लोर (500 ग्राम/हेक्टेयर) से 89.2% तक खरपतवार नियंत्रित किए जा सकते हैं। 3-4 बार निराई जरूरी होती है।

उर्वरक प्रबंधन:

सिफारिश की गई मात्रा 60:30:60 (N:P:K) किग्रा/हेक्टेयर है। इसके साथ 20 किग्रा बोरेक्स और 15 किग्रा जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर देने से फाइबर उत्पादन और पत्तियों की लंबाई में सुधार होता है।

सिंचाई:

सिसल वर्षा पर निर्भर होता है लेकिन ड्रिप सिंचाई से बेहतर परिणाम मिलते हैं। दो सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई से पत्तियाँ अधिक लंबी होती हैं। वर्षा ऋतु में जल निकासी जरूरी है।

उत्पादन और संभावनाएँ:

भारत में औसतन 600-800 किग्रा/हेक्टेयर रेशा उत्पादन होता है, लेकिन वैज्ञानिक तरीकों और बेहतर प्रबंधन से यह 2000 किग्रा/हे. या अधिक तक पहुँच सकता है। बढ़ती जैविक उत्पादों की मांग और सस्ते रेशे की आवश्यकता को देखते हुए सिसल की व्यावसायिक खेती किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बन सकती है। इससे सूखे और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में टिकाऊ कृषि को भी बढ़ावा मिलता है।

मोती की खेती उत्पादन, लाभ संबंधी सम्पूर्ण जानकारी



मोती की मांग आज स्थानीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी तेजी से बढ़ रही है। इसी वजह से किसान अब पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर मोती की खेती की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। कम लागत और अधिक मुनाफे वाली यह खेती पुरुषों और महिलाओं, दोनों के लिए लाभदायक है। बिहार के नालंदा जिले की मधु पटेल पिछले चार सालों से डिजाइनर मोती तैयार कर रही हैं और अन्य किसानों को भी यह काम अपनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

अब समुद्र नहीं, तालाब और टैंक में होती है मोती की खेती

पहले मोती केवल समुद्र से प्राप्त किए जाते थे, लेकिन अब किसान इन्हें अपने तालाबों या टैंकों में भी तैयार कर सकते हैं। यह प्रक्रिया “मोती एक्वाकल्चर” कहलाती है। एक सामान्य मोती बनने में लगभग 18 महीने लगते हैं, जबकि डिजाइनर मोती को तैयार होने में 2 से 2.5 साल का समय लग सकता है। इसके लिए प्रशिक्षण लेना जरूरी होता है।

न्यूक्लीयस और डिजाइनर मोती

मधु पटेल बताती हैं कि अलग-अलग डिजाइन के मोती बनाने के लिए न्यूक्लीयस (कोर) तैयार किया जाता है, जिसे सीप के अंदर डाला जाता है। न्यूक्लीयस बेकार सीप के पाउडर और गोंद (एरलडाइट) से बनाया जाता है और उसकी लागत ₹1-2 आती है, जबकि बाज़ार में यह ₹3-6 में बिकता है। कुछ खास डिजाइन जैसे अक्षर वाले न्यूक्लीयस की कीमत ₹40 तक हो सकती है।

मोती उत्पादन की प्रक्रिया

- सबसे पहले अच्छी गुणवत्ता वाले सीपों का चयन किया जाता है।
- सीपों को लाने के 1-2 दिन बाद उनकी सर्जरी करके न्यूक्लीयस डाला जाता है।
- फिर इन्हें एक सप्ताह के लिए एंटीबायोटिक ट्रीटमेंट दिया जाता है।
- इसके बाद नायलॉन बैग में रखकर तालाब में

बांस या पाइप के सहारे डुबो दिया जाता है।

- मोती बनने में 15 से 30 महीने तक का समय लगता है।

ध्यान रखने योग्य बातें

- सर्जरी के बाद अगर किसी सीप का मुंह खुला रह जाए तो उसे हटा देना चाहिए।
- डिजाइनर न्यूक्लीयस एक सीप में 2 से अधिक नहीं होने चाहिए; सामान्य गोल न्यूक्लीयस 4 तक डाले जा सकते हैं।
- एक सीप को 3 लीटर पानी की जरूरत होती है; टैंक खेती में 20-25 लीटर प्रति सीप का पानी चाहिए।
- मछली पालन के साथ मोती की खेती करने से लागत कम होती है।
- एक सीप पर ₹60-70 का खर्च आता है और एक मोती ₹500 से ₹2000 या उससे अधिक में बिक सकता है।
- पानी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए समय-समय पर 40% पानी बदलना चाहिए।

अच्छे सीप की पहचान

अच्छा सीप कम से कम 6 सेमी लंबा होना चाहिए, इंद्रधनुषी चमक वाला हो और वजन 35 ग्राम से कम न हो। इसकी कीमत ₹4-10 के बीच होती है।

मोती की खेती का प्रशिक्षण कहाँ से लें?

मोती की खेती का प्रशिक्षण CIFA (Central Institute of Freshwater Aquaculture), भुवनेश्वर से लिया जा सकता है। इसके रीजनल सेंटर भटिंडा, बेंगलुरु और विजयवाड़ा में भी प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं।

मोती की खेती एक लाभकारी व्यवसाय है जिसे उचित प्रशिक्षण, धैर्य और सही तकनीक से अपनाकर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है।

आधुनिक तकनीक से चीकू की खेती कैसे करें: जानें पूरी जानकारी



चीकू की बाजार में बढ़ती मांग

चीकू एक ऐसा फल है जो स्वाद के साथ-साथ पोषण के लिहाज से भी बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें विटामिन C, फाइबर, खनिज और कई जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करते हैं। यही कारण है कि डॉक्टर भी अक्सर बीमार लोगों को चीकू खाने की सलाह देते हैं। इसकी लगातार बढ़ती मांग ने इसे किसानों के लिए एक लाभकारी फसल बना दिया है। बाजार में चीकू का दाम आमतौर पर 100 से 120 रुपये प्रति किलो के बीच रहता है, जो इसे नकदी फसल के रूप में आकर्षक बनाता है।

छोटे किसानों के लिए बेहतर विकल्प

चीकू की खेती (Chikoo Cultivation) खासतौर पर छोटे और मध्यम वर्ग के किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। कम जमीन में भी इसकी खेती करके अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, चीकू एक ऐसा फल है

जिसे किसान सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाकर बेहतर कीमत प्राप्त कर सकते हैं। पारंपरिक फसलों की तुलना में इसमें बिचौलियों की भूमिका कम होती है, जिससे किसानों को अधिक मुनाफा मिलता है। इस वजह से यह खेती किसानों के लिए आय बढ़ाने का अच्छा माध्यम बन रही है।

उपयुक्त मिट्टी का चयन

चीकू की सफल खेती के लिए सही मिट्टी का चयन बेहद जरूरी होता है। इसके लिए रेतीली काली मिट्टी और जलोढ़ मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती हैं। मिट्टी का पीएच स्तर 6.0 से 8.0 के बीच होना चाहिए, जिससे पौधों की वृद्धि अच्छी तरह हो सके। अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी चीकू के पौधों के लिए अधिक लाभदायक होती है, क्योंकि जलभराव की स्थिति में पौधों की जड़ें प्रभावित हो सकती हैं। इसलिए खेत का चयन करते समय इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अनुकूल जलवायु की जरूरत

चीकू की खेती के लिए मध्यम जलवायु सबसे उपयुक्त होती है। अत्यधिक ठंड या पाला इस फसल के लिए नुकसानदायक होता है। चीकू के पौधों के लिए 10 से 38 डिग्री सेल्सियस तापमान आदर्श माना जाता है। बहुत अधिक गर्मी या अत्यधिक ठंड दोनों ही स्थितियों में पौधों की वृद्धि प्रभावित हो सकती है। इसलिए किसानों को ऐसे क्षेत्र का चयन करना चाहिए जहां जलवायु संतुलित हो और मौसम स्थिर बना रहे।

बुआई का सही समय

चीकू की खेती में सही समय पर बुआई करना बहुत महत्वपूर्ण है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में सितंबर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के पहले सप्ताह तक बुआई करना उपयुक्त माना जाता है। वहीं, सिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से नवंबर के पहले सप्ताह तक बुआई पूरी कर लेनी चाहिए। सही समय पर बुआई करने से पौधों

की वृद्धि अच्छी होती है और उत्पादन भी बेहतर मिलता है।

बीजोपचार और रोपण तकनीक

अच्छी फसल के लिए बीजोपचार जरूरी होता है। चीकू के बीजों को बोने से पहले 4 से 5 घंटे तक पानी में भिगोकर सीड प्राइमिंग करनी चाहिए। इसके बाद ट्राइकोडर्मा और वीटावैक्स जैसे फफूंदनाशकों से बीज उपचार करना लाभदायक होता है। इसके अलावा राइजोबियम कल्चर का उपयोग भी किया जा सकता है, जिससे पौधों की जड़ों का विकास बेहतर होता है। सही बीजोपचार से पौधे रोगमुक्त रहते हैं और उत्पादन में वृद्धि होती है।

सिंचाई और देखभाल

चीकू की खेती में उचित सिंचाई बेहद आवश्यक है। जब पौधों में फल बनने लगते हैं, तो सर्दियों में लगभग 30 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। वहीं गर्मियों में 15 दिनों के अंतराल पर पानी देना जरूरी होता है। नियमित सिंचाई और सही देखभाल से पौधे स्वस्थ रहते हैं और फल की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। साथ ही, खेत में जलभराव से बचना चाहिए, क्योंकि इससे जड़ों को नुकसान हो सकता है।

पैदावार और मुनाफे की संभावना

चीकू की खेती में पौधों से उत्पादन पांचवें वर्ष से शुरू हो जाता है। शुरुआत में प्रति एकड़ लगभग 4 टन उत्पादन मिलता है, जो सातवें वर्ष तक 6 टन और पंद्रहवें वर्ष तक 8 टन तक पहुंच सकता है। बाजार में चीकू का औसत मूल्य 100 से 150 रुपये प्रति किलो होता है। इस हिसाब से एक एकड़ से सालाना लाखों रुपये की आय संभव है। लागत घटाने के बाद किसान लगभग 5 लाख रुपये तक का शुद्ध मुनाफा कमा सकते हैं, जिससे यह खेती एक लाभदायक विकल्प बन जाती है।

बंजर जमीन में अश्वगंधा की खेती कैसे करें: सही तरीका, समय और उन्नत तकनीकें

बंजर जमीन में अश्वगंधा की खेती कैसे करें



जानें, बंजर जमीन पर अश्वगंधा की खेती की पूरी जानकारी

अश्वगंधा आज के समय में किसानों के लिए एक ऐसी नकदी और औषधीय फसल बनकर उभरी है, जो कम लागत में अधिक लाभ देने की क्षमता रखती है। खास बात यह है कि इसकी मुख्य उपज जड़ होती है, लेकिन पौधे का हर हिस्सा पत्ते, बीज और तना भी बाजार में उपयोगी और बिकाऊ है। यही कारण है, कि अश्वगंधा की खेती करने वाले किसान किसी एक उत्पाद पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि उन्हें बहुआयामी आय के अवसर मिलते हैं। कम उपजाऊ, बंजर या सिंचाई रहित भूमि वाले किसान भी इसे आसानी से उगा सकते हैं। यह उन क्षेत्रों के लिए वरदान है जहां पारंपरिक फसलें उगाना मुश्किल होता है।

उपयुक्त जलवायु और मिट्टी की आवश्यकता

अश्वगंधा की खेती के लिए शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। लगभग 500 से 700 मिमी वार्षिक वर्षा और 30 से 35 डिग्री

सेल्सियस तापमान इसकी बेहतर वृद्धि के लिए आदर्श है। यह फसल खारे पानी और कम उर्वर भूमि में भी अच्छी तरह बढ़ती है। खास बात यह है कि यदि इसकी सिंचाई हल्के खारे पानी से की जाए, तो इसमें पाए जाने वाले औषधीय तत्व 'एल्कलॉइड' की मात्रा दो से ढाई गुना तक बढ़ जाती है। इस कारण इसकी गुणवत्ता और बाजार मूल्य दोनों में वृद्धि होती है।

वानस्पतिक परिचय और पौधे की विशेषताएं

अश्वगंधा का वानस्पतिक नाम विथानिया सोम्निफेरा है। इसका पौधा सामान्यतः 40 से 150 सेंटीमीटर तक ऊंचा होता है और इसका तना सीधा तथा शाखायुक्त होता है। इसकी जड़ें लंबी, मोटी और अंडाकार होती हैं, जो बाजार में सबसे ज्यादा मूल्यवान होती हैं। इसके फूल हरे या हल्के पीले रंग के होते हैं, जबकि फल छोटे, गोल और लाल रंग के होते हैं जिनमें कई बीज पाए जाते हैं। यह पौधा रोगों

से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहता है और इसे रासायनिक उर्वरकों की बहुत कम आवश्यकता होती है।

देश में मांग और प्रमुख उत्पादन क्षेत्र

भारत में अश्वगंधा की मांग लगातार बढ़ रही है, जबकि उत्पादन अपेक्षाकृत कम है। देश में लगभग 5000 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती होती है और वार्षिक उत्पादन करीब 1600 टन है, जबकि मांग लगभग 7000 टन तक पहुंच चुकी है। इस अंतर के कारण किसानों को बाजार में अच्छी कीमत मिलती है। मध्य प्रदेश के मंदसौर, नीमच, जावड़ और भानपुरा क्षेत्र तथा राजस्थान के नागौर जिले में इसकी खेती विशेष रूप से प्रसिद्ध है। नागौरी अश्वगंधा की गुणवत्ता के कारण इसकी अलग पहचान बनी हुई है।

औषधीय उपयोग और पोषक तत्व

अश्वगंधा का उपयोग आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा में लंबे समय से किया जा रहा है। इसकी सूखी जड़ों से कई प्रकार की औषधियां बनाई जाती हैं, जो तनाव, चिंता और अनिद्रा जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक होती हैं। यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और तंत्रिका तंत्र को मजबूत करता है। इसके अलावा, इसका उपयोग गठिया, कैंसर, त्वचा रोग, पेट के अल्सर, फेफड़ों की सूजन और अन्य कई रोगों के उपचार में किया जाता है। इसमें विथानिन, विथाफेरिन, कोलीन, निकोटीन जैसे एल्कलॉइड, साथ ही ग्लाइकोसाइड, अमीनो अम्ल और शर्करा भी पाए जाते हैं, जो इसे अत्यंत लाभकारी बनाते हैं।

खेती की विधि और उन्नत बीज

अश्वगंधा की खेती वर्ष में दो बार की जा सकती है—रबी (फरवरी-मार्च) और खरीफ (अगस्त-सितंबर) मौसम में। इसकी फसल लगभग 5 महीनों में तैयार हो जाती है। किसान इसे बीज छिड़काव विधि या नर्सरी से पौध तैयार कर रोपाई के माध्यम से उगा सकते हैं। नर्सरी जून-जुलाई में तैयार की जाती है। पौधों के बीच 5 से 10 सेंटीमीटर और पंक्तियों के बीच लगभग एक फुट

फसल प्रबंधन: सिंचाई, खाद और सुरक्षा

अश्वगंधा को बहुत कम सिंचाई की आवश्यकता होती है, इसलिए यह वर्षा आधारित खेती के लिए उपयुक्त है। यदि खेत में जल निकासी अच्छी हो, तो सिंचित क्षेत्रों में भी इसे उगाया जा सकता है। बुवाई से पहले गोबर की खाद या सीमित मात्रा में नाइट्रोजन का उपयोग पर्याप्त होता है। फसल में समय-समय पर निराई-गुड़ाई करना जरूरी है ताकि जड़ों का विकास बेहतर हो सके। रोग और कीट नियंत्रण के लिए बीजों को थिरम या डाइथेन एम-45 से उपचारित करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर कीटनाशकों का छिड़काव करना चाहिए।

कटाई, उपज, लागत और लाभ

अश्वगंधा की फसल 135 से 150 दिनों में तैयार हो जाती है। जब पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं, तब इसकी खुदाई की जाती है। जड़ों को निकालकर साफ कर धूप में सुखाया जाता है और फिर आकार के अनुसार छांटा जाता है। एक हेक्टेयर में सामान्यतः 7-8 क्विंटल ताजी जड़ें प्राप्त होती हैं, जो सूखने के बाद 4-5 क्विंटल रह जाती हैं। इसके साथ 50-60 किलोग्राम बीज भी मिलते हैं। इसकी खेती की लागत लगभग 10-12 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर होती है, जबकि बाजार में जड़ें 150-200 रुपये प्रति किलोग्राम तक बिकती हैं। इस प्रकार किसान लागत से कई गुना अधिक लाभ कमा सकते हैं, जिससे यह फसल आर्थिक रूप से बेहद फायदेमंद साबित होती है।

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर VS पॉवर ट्रैक यूरो 60: सही विकल्प कौन सा है?



सोनालीका
डीआई 60 सिकंदर

पॉवर ट्रैक
यूरो 60

मशीनरी



सोनालीका डीआई 60 सिकंदर VS पॉवर ट्रैक यूरो 60: कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

60 एचपी श्रेणी में ट्रैक्टर खरीदने वाले किसानों के सामने सबसे बड़ा सवाल यह होता है कि कौन-सा ट्रैक्टर उनकी खेती की जरूरतों को बेहतर तरीके से पूरा करेगा। भारतीय बाजार में सोनालीका डीआई 60 सिकंदर और पॉवर ट्रैक यूरो 60 दोनों ही लोकप्रिय ट्रैक्टर हैं। ये दोनों मॉडल अपनी दमदार क्षमता, आधुनिक तकनीक और बेहतर प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं। अगर आप भी 60 एचपी का नया ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो इन दोनों मॉडलों के बीच का अंतर जानना आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। आइए, दोनों ट्रैक्टरों की विशेषताओं की विस्तार से तुलना करते हैं।

इंजन क्षमता और प्रदर्शन में कौन है आगे?

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में 3707 सीसी का 4-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 60 एचपी की शक्ति प्रदान करता है। इसका इंजन 2200 आरपीएम पर

काम करता है और 51 एचपी का पीटीओ पावर देता है। इसमें वेट टाइप एयर फिल्टर और वाटर-कूल्ड तकनीक का उपयोग किया गया है, जो इंजन को लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करती है। वहीं, पॉवर ट्रैक यूरो 60 में 3682 सीसी का 4-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 60 एचपी की क्षमता के साथ आता है। इसका इंजन भी 2200 आरपीएम पर काम करता है और 51 एचपी का पीटीओ पावर प्रदान करता है। इसमें ड्राई और ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर दिया गया है। इंजन क्षमता के मामले में दोनों ट्रैक्टर लगभग समान हैं, लेकिन सीसी क्षमता के आधार पर सोनालीका डीआई 60 सिकंदर थोड़ा आगे दिखाई देता है।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स की तुलना

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन के साथ साइड शिफ्टर की सुविधा दी गई है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं। इसके अलावा, इसमें सिंगल और ड्यूल क्लच का

महिंद्रा YUVRAJ 215 NXT NT

स्मार्ट। स्ट्रॉन्ग। इंटरकल्चर खेती के लिए उपयुक्त



mahindra
YUVRAJ
215 NXT.NT

सही
उपयोग:



कल्टिवेशन



रोटावेटिंग



स्प्रेडिंग

विकल्प भी उपलब्ध है।

दूसरी ओर, पॉवर ट्रेक यूरो 60 में साइड शिफ्ट ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ 16 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर का अतिरिक्त विकल्प भी मिलता है। यह सुविधा किसानों को विभिन्न कृषि कार्यों के लिए अधिक विकल्प प्रदान करती है। अगर गियर विकल्पों की बात करें, तो पॉवर ट्रेक यूरो 60 अधिक लचीलापन प्रदान करता है।

ब्रेक और स्टीयरिंग सिस्टम में अंतर

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में ऑयल इमर्स ब्रेक दिए गए हैं, जो बेहतर सुरक्षा और नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं। इसमें मैकेनिकल और पावर स्टीयरिंग दोनों का विकल्प उपलब्ध है। वहीं, पॉवर ट्रेक यूरो 60 में मल्टी-प्लेट ऑयल इमर्स डिस्क ब्रेक दिए गए हैं, जो कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर नियंत्रण प्रदान करते हैं। इसमें बैलेंसड पावर स्टीयरिंग दिया गया है, जिससे लंबे समय तक काम करने के दौरान चालक को अधिक आराम मिलता है।

पीटीओ क्षमता और कृषि उपकरणों के साथ अनुकूलता

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में 6-स्प्लाइन पीटीओ दिया गया है, जो 540 आरपीएम पर काम करता है। यह रोटोवेटर, थ्रेशर और अन्य कृषि उपकरणों के साथ बेहतर प्रदर्शन करता है। दूसरी तरफ, पॉवर ट्रेक यूरो 60 में सिंगल 540 और एमआरपीटीओ के साथ इंडिपेंडेंट पीटीओ की सुविधा दी गई है। इसका पीटीओ 1810 ईआरपीएम पर 540 आरपीएम की गति प्रदान करता है। यह विभिन्न कृषि उपकरणों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम है।

फ्यूल टैंक क्षमता किस ट्रैक्टर में अधिक है?

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में 62 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जबकि पॉवर ट्रेक यूरो 60 में 60 लीटर का फ्यूल टैंक मिलता है। हालांकि दोनों ट्रैक्टरों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं है, लेकिन ईंधन क्षमता

के मामले में सोनालीका डीआई 60 सिकंदर थोड़ा बेहतर विकल्प साबित हो सकता है।

हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता की तुलना

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जिससे यह भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठा सकता है। वहीं, पॉवर ट्रेक यूरो 60 में 1800 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और एडीडीसी (ADDC) तकनीक दी गई है। लिफ्टिंग क्षमता के मामले में सोनालीका डीआई 60 सिकंदर अधिक शक्तिशाली साबित होता है।

डायमेंशन और वजन में कौन बेहतर है?

पॉवर ट्रेक यूरो 60 का कुल वजन 2400 किलोग्राम है। इसका व्हीलबेस 2220 मिमी, लंबाई 3700 मिमी और चौड़ाई 1900 मिमी है। इसके अलावा, इसमें 432 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस भी दिया गया है। हालांकि सोनालीका डीआई 60 सिकंदर के वजन और डायमेंशन की विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन इसके बड़े टायर इसे बेहतर संतुलन और मजबूती प्रदान करते हैं।

टायर का आकार और खेतों में पकड़

सोनालीका डीआई 60 सिकंदर में आगे की तरफ 6.00 x 16, 6.50 x 16 और 7.5 x 16 टायर के विकल्प दिए गए हैं। पीछे की तरफ 16.9 x 28 और 14.9 x 28 टायर का विकल्प मिलता है। वहीं, पॉवर ट्रेक यूरो 60 में आगे 7.50 x 16 और पीछे 16.9 x 28 आकार के टायर दिए गए हैं। दोनों ट्रैक्टर खेतों में बेहतर पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं।

वारंटी और कीमत की तुलना

पॉवर ट्रेक यूरो 60 के साथ 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी दी जाती है, जबकि सोनालीका डीआई 60 सिकंदर की वारंटी की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

अगर कीमत की बात करें, तो सोनालीका डीआई 60 सिकंदर की कीमत ₹8.73 लाख से ₹9.09 लाख के बीच है। वहीं, पॉवर ट्रैक यूरो 60 की कीमत ₹8.51 लाख से ₹8.85 लाख के बीच है।

कौन-सा ट्रैक्टर खरीदना चाहिए?

अगर आपकी प्राथमिकता अधिक लिफ्टिंग क्षमता और बड़ी ईंधन टैंक क्षमता है, तो सोनालीका डीआई 60 सिकंदर आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है।

लेकिन अगर आप अधिक गियर विकल्प, बेहतर ट्रांसमिशन, आधुनिक पीटीओ सिस्टम और लंबी वारंटी वाला ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं, तो पॉवर ट्रैक यूरो 60 एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

किसी भी ट्रैक्टर को खरीदने से पहले अपनी खेती की जरूरतों, खेत के आकार, उपयोग होने वाले कृषि उपकरणों और बजट को ध्यान में रखना चाहिए। इससे आप अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सही ट्रैक्टर का चयन कर पाएंगे।

प्रीत 5549: 55 एचपी श्रेणी में एक शक्तिशाली ट्रैक्टर

प्रीत 5549

55 एचपी श्रेणी में एक शक्तिशाली ट्रैक्टर



प्रीत 5549 ट्रैक्टर किसानों के लिए एक किफायती विकल्प

नमस्कार किसान भाइयों, स्वागत है आपका मेरीखेती के इस नए लेख में। अगर आप भी खेती-किसानी के कामों को आसान बनाने के लिए एक शक्तिशाली और आधुनिक ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो प्रीत 5549 ट्रैक्टर आपके लिए एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। यह ट्रैक्टर 55 HP की दमदार इंजन पावर और 4WD ड्राइव के साथ आता है, जो इसे अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए उपयोगी बनाती है। खेती में जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि उपकरणों के संचालन जैसे कई कामों में ट्रैक्टर की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। ऐसे में किसान के लिए ऐसा ट्रैक्टर चुनना जरूरी होता है, जो बेहतर प्रदर्शन के साथ-साथ मजबूत और टिकाऊ भी हो। प्रीत 5549 को इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए कई उपयोगी फीचर्स के साथ तैयार किया गया है। इस लेख में हम आपको प्रीत 5549 ट्रैक्टर की इंजन पावर, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन, ट्रांसमिशन, हाइड्रोलिक्स, टायर और कीमत से जुड़ी पूरी जानकारी विस्तार से बताएंगे।

प्रीत 5549 ट्रैक्टर का इंजन पावर और प्रदर्शन

प्रीत 5549 ट्रैक्टर में किसानों को 4 सिलेंडर वाला 55 HP का शक्तिशाली इंजन मिलता है। इस ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक क्षमता यानी Cubic Capacity 4087 cc बताई गई है, जो इसे कृषि कार्यों के दौरान बेहतर पावर प्रदान करने में मदद करती है। ट्रैक्टर का इंजन 2200 रेटेड RPM पर प्रभावी प्रदर्शन करता है। इसके अलावा, इसमें Multi Cylinder Inline BOSCH फ्यूल इंजेक्शन पंप दिया गया है, जो इंजन को बेहतर तरीके से ईंधन उपलब्ध कराने में सहायक होता है। इंजन को गर्म होने से बचाने के लिए इसमें Water Cooled Cooling System दिया गया है। 55 HP की इंजन क्षमता के कारण यह ट्रैक्टर खेत में भारी कृषि उपकरणों के साथ काम करने के लिए उपयुक्त माना जाता है। 4 सिलेंडर इंजन होने के कारण किसानों को खेती के विभिन्न कार्यों में पर्याप्त पावर और प्रदर्शन मिल सकता है। यही वजह है कि जो किसान मध्यम से बड़े स्तर पर खेती करते हैं और एक बहुउपयोगी ट्रैक्टर की तलाश में हैं, उनके लिए PREET 5549 एक उपयोगी विकल्प बन सकता है।

प्रीत 5549 ट्रैक्टर का ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

प्रीत 5549 ट्रैक्टर के ट्रांसमिशन की बात करें तो इसमें Sliding Mesh Transmission दिया गया है। ट्रैक्टर के गियरबॉक्स में 12 Forward और 12 Reverse गियर मिलते हैं। इस तरह कुल 24 गियर विकल्प होने से किसान अपनी जरूरत और खेत के काम के अनुसार ट्रैक्टर की गति को नियंत्रित कर सकते हैं। अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए अलग-अलग गति की आवश्यकता होती है और ऐसे में अधिक गियर विकल्प ट्रैक्टर के संचालन को सुविधाजनक बना सकते हैं। खेत की जुताई, कल्टीवेटर चलाने, बुवाई या ट्रॉली से ढुलाई जैसे कामों में किसान अपनी जरूरत के अनुसार उपयुक्त गियर का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके

अलावा, 4WD ड्राइव सिस्टम इस ट्रैक्टर को कठिन और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में बेहतर पकड़ प्रदान करने में मदद करता है। खासकर ऐसी जमीन जहां मिट्टी अधिक गीली हो या खेत में ट्रैक्टर को अधिक ट्रैक्शन की जरूरत हो, वहां 4WD सिस्टम उपयोगी साबित हो सकता है।

प्रीत 5549 ट्रैक्टर में क्लच और ब्रेक की सुविधा

प्रीत 5549 ट्रैक्टर में किसानों को Heavy Duty Clutch और Oil Immersed Brakes जैसी सुविधाएं मिलती हैं। खेती के दौरान ट्रैक्टर को लंबे समय तक लगातार काम करना पड़ सकता है, इसलिए इसमें मजबूत और भरोसेमंद क्लच सिस्टम का होना महत्वपूर्ण माना जाता है। Heavy Duty Clutch ट्रैक्टर के विभिन्न कृषि कार्यों में बेहतर प्रदर्शन देने में सहायक हो सकता है। वहीं, Oil Immersed Brakes ट्रैक्टर को नियंत्रित करने और ब्रेकिंग के दौरान बेहतर नियंत्रण प्रदान करने में मदद करते हैं। यह सुविधा विशेष रूप से खेत में काम करने के साथ-साथ ढुलाई के कार्यों के दौरान भी उपयोगी हो सकती है। ट्रैक्टर को बार-बार रोकने और चलाने की जरूरत वाले कार्यों में बेहतर ब्रेकिंग सिस्टम किसान के लिए सुविधा और नियंत्रण दोनों बढ़ा सकता है। इस तरह प्रीत 5549 में दिए गए क्लच और ब्रेक फीचर्स इसे दैनिक कृषि कार्यों के लिए एक व्यावहारिक ट्रैक्टर बनाने में योगदान देते हैं।

प्रीत 5549 ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक और लिफ्टिंग क्षमता

प्रीत 5549 ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक क्षमता भी किसानों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस ट्रैक्टर में 2400 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसके हाइड्रोलिक्स में TPL Category II Linkage मिलता है, जिसकी मदद से किसान कई

तरह के कृषि उपकरणों को ट्रैक्टर के साथ जोड़कर काम कर सकते हैं।

अधिक लिफ्टिंग कैपेसिटी होने के कारण यह ट्रैक्टर भारी कृषि उपकरणों को संभालने में सक्षम हो सकता है। किसान इसका इस्तेमाल रोटोवेटर, कल्टीवेटर, हल और अन्य उपकरणों के साथ कर सकते हैं। खेती के अलावा ट्रैक्टर का उपयोग ढुलाई के कार्यों में भी किया जाता है और इस लिहाज से इसकी मजबूत हाइड्रोलिक क्षमता उपयोगी साबित हो सकती है। हालांकि, किसी भी उपकरण का उपयोग करते समय किसान को ट्रैक्टर की निर्धारित क्षमता और उपकरण के वजन का ध्यान रखना चाहिए। सही उपकरण के साथ इस्तेमाल किए जाने पर प्रीत 5549 की हाइड्रोलिक क्षमता किसानों की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में मदद कर सकती है।

प्रीत 5549 ट्रैक्टर की फ्यूल टैंक क्षमता

किसानों के लिए ट्रैक्टर खरीदते समय फ्यूल टैंक की क्षमता भी एक महत्वपूर्ण पहलू होती है। प्रीत 5549 ट्रैक्टर में 67 लीटर की बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। बड़े फ्यूल टैंक का फायदा यह है कि किसान खेत में लंबे समय तक काम कर सकते हैं और बार-बार ईंधन भरवाने के लिए रुकने की आवश्यकता कम हो सकती है। खेती के व्यस्त सीजन में जब किसान को लगातार कई घंटे खेत में काम करना पड़ता है, तब बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता उपयोगी साबित होती है। खासकर जुताई, बुवाई और अन्य कृषि कार्यों के दौरान लगातार काम करने के लिए यह सुविधा किसानों को अतिरिक्त सुविधा दे सकती है। हालांकि, वास्तविक ईंधन खपत खेत की स्थिति, ट्रैक्टर पर लोड, इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण और कार्य की प्रकृति पर निर्भर करती है। ऐसे में किसान को ट्रैक्टर की पावर और फ्यूल क्षमता के साथ-साथ अपने क्षेत्र में उपलब्ध ईंधन की कीमत को भी ध्यान में रखकर खरीदारी का फैसला करना चाहिए।

प्रीत 5549 के टायर और 4WD सिस्टम

प्रीत 5549 ट्रैक्टर में 4WD ड्राइव सिस्टम दिया गया

है, जो इसे अलग-अलग तरह की कृषि परिस्थितियों में काम करने के लिए उपयोगी बनाता है। ट्रैक्टर के टायरों की बात करें तो इसमें 9.5 X 24 के फ्रंट टायर और 16.9 X 28 के रियर टायर मिलते हैं। 4WD सिस्टम के साथ उपयुक्त टायर ट्रैक्टर को खेत में बेहतर पकड़ और ट्रैक्शन देने में सहायता कर सकते हैं।

प्रीत 5549 ट्रैक्टर की कीमत

प्रीत 5549 ट्रैक्टर की कीमत की बात करें तो इसकी कीमत लगभग 8.09 लाख रुपये से 8.42 लाख रुपये तक बताई जाती है। हालांकि, ट्रैक्टर की वास्तविक कीमत अलग-अलग राज्यों, शहरों और डीलरशिप के अनुसार कुछ कम या ज्यादा हो सकती है। इसके अलावा, एक्स-शोरूम कीमत और ऑन-रोड कीमत में भी अंतर देखने को मिल सकता है। किसान को ट्रैक्टर खरीदने से पहले अपने नजदीकी अधिकृत डीलर से इसकी मौजूदा कीमत, उपलब्ध ऑफर, फाइनेंस सुविधा और अन्य शुल्क की जानकारी जरूर प्राप्त करनी चाहिए।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने लॉन्च किए एमयू4502 और एमयू5002 ट्रैक्टर, मिलेगी 8 साल की वारंटी



**एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने लॉन्च किए
एमयू4502 और एमयू5002
ट्रैक्टर, मिलेगी 8 साल की वारंटी**



भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए एस्कॉर्ट्स कुबोटा लिमिटेड ने अपने प्रीमियम ट्रैक्टर पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए Kubota MU4502 और Kubota MU5002 ट्रैक्टर बाजार में उतारे हैं। 45 एचपी और 50 एचपी की क्षमता वाले ये दोनों ट्रैक्टर आधुनिक तकनीक, बेहतर प्रदर्शन और उन्नत सुविधाओं के साथ पेश किए गए हैं। कंपनी का मानना है कि ये नए मॉडल 41-50 एचपी श्रेणी में उसकी स्थिति को और मजबूत करेंगे, क्योंकि यह भारतीय ट्रैक्टर उद्योग के सबसे बड़े और सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में से एक है।

8 साल की ट्रांसफरेबल वारंटी बनी सबसे बड़ी खासियत

इन दोनों ट्रैक्टरों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी 8 साल की ट्रांसफरेबल वारंटी है। कंपनी का दावा है कि भारतीय ट्रैक्टर उद्योग में पहली बार किसी मॉडल के

साथ इस तरह की वारंटी पेश की गई है। इस वारंटी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यदि कोई किसान भविष्य में ट्रैक्टर बेचता है, तो निर्धारित नियमों और शर्तों के तहत वारंटी का लाभ नए मालिक को भी मिल सकेगा। इससे ट्रैक्टर की रीसेल वैल्यू बढ़ने की संभावना है। कंपनी का कहना है कि यह पहल उत्पाद की गुणवत्ता, मजबूती और लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन के प्रति उसके विश्वास को दर्शाती है।

जापानी तकनीक से लैस KQP4 इंजन मिलेगा

Kubota MU4502 और MU5002 में कंपनी ने KQP4 जापानी इंजन का इस्तेमाल किया है। यह इंजन बेहतर प्रदर्शन के साथ ईंधन दक्षता और टिकाऊपन का भी संतुलन बनाए रखने में सक्षम है। आधुनिक तकनीक से लैस यह इंजन खेतों में लंबे समय तक लगातार काम करने के लिए तैयार किया

गया है। कंपनी का दावा है कि इसकी जापानी इंजीनियरिंग किसानों को बेहतर उत्पादकता और विश्वसनीय प्रदर्शन प्रदान करेगी।

12+4 गियरबॉक्स से हर काम के लिए मिलेगी सही गति

दोनों ट्रैक्टरों में 12 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर वाला मल्टी-स्पीड सिंक्रोमेश गियरबॉक्स दिया गया है। यह सुविधा किसानों को अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार उपयुक्त गति चुनने की आजादी देती है। चाहे खेत की जुताई करनी हो, बुवाई करनी हो या फिर ढुलाई का काम करना हो, यह गियरबॉक्स विभिन्न परिस्थितियों में बेहतर नियंत्रण और सुचारू संचालन सुनिश्चित करता है।

DSS तकनीक से खेती होगी और अधिक सटीक

इन ट्रैक्टरों में Pompa Lift with DSS (Dual Stabilizer Spring) Technology का इस्तेमाल किया गया है। यह तकनीक असमान खेतों में भी कृषि उपकरणों को स्थिर बनाए रखने में मदद करती है। कंपनी के अनुसार, यह तकनीक उपकरणों को एक समान गहराई पर काम करने में सहायता करती है, जिससे जुताई, बुवाई और अन्य कृषि कार्यों की गुणवत्ता में सुधार होता है। इससे किसानों को बेहतर परिणाम मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

कई कृषि उपकरणों के साथ किया जा सकेगा उपयोग

कंपनी ने MU4502 और MU5002 को केवल एक साधारण ट्रैक्टर के रूप में नहीं, बल्कि एक मल्टी-यूटिलिटी मशीन के रूप में विकसित किया है। इन ट्रैक्टरों का उपयोग सुपर सीडर, सीड ड्रिल, पोटैटो प्लांटर, मिनी राउंड बेलर और कल्टीवेटर जैसे कई कृषि उपकरणों के साथ किया जा सकता है। इसके अलावा, इनका इस्तेमाल धान, गेहूं, मक्का, दलहन और

सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों की खेती में भी किया जा सकता है। खेती के अलावा, ये ट्रैक्टर ढुलाई और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के लिए भी उपयुक्त हैं।

रिवर्स पीटीओ की सुविधा से बढ़ेगी कार्यक्षमता

इन दोनों ट्रैक्टरों में रिवर्स पीटीओ की सुविधा भी दी गई है, जो इन्हें और अधिक उपयोगी बनाती है। यह सुविधा विशेष रूप से रेटावेटर और स्ट्रॉ रीपर जैसे उपकरणों के साथ काम करते समय काफी फायदेमंद साबित होती है। इससे किसानों को कृषि कार्यों को अधिक प्रभावी और कम समय में पूरा करने में मदद मिलती है।

किसानों के आराम का भी रखा गया पूरा ध्यान

कंपनी ने इन ट्रैक्टरों को डिजाइन करते समय किसानों की सुविधा को प्राथमिकता दी है। इनमें फुली कवर्ड फ्लैट-डेक प्लेटफॉर्म, प्रीमियम बकेट सीट, सस्पेंडेड पैडल और डबल-एक्टिंग पावर स्टीयरिंग जैसी सुविधाएं दी गई हैं। इसके अलावा, ट्रैक्टर के सभी कंट्रोल्स को एर्गोनॉमिक तरीके से डिजाइन किया गया है, जिससे लंबे समय तक काम करने के दौरान चालक को कम थकान महसूस होती है।

फुल एलईडी लाइटिंग और बैलेंसर शाफ्ट तकनीक से मिलेगा प्रीमियम अनुभव

MU4502 और MU5002 में फुल एलईडी लाइटिंग सिस्टम दिया गया है, जो रात के समय बेहतर रोशनी प्रदान करता है। इससे कम रोशनी में भी खेतों में सुरक्षित तरीके से काम करना आसान हो जाता है। वहीं, बैलेंसर शाफ्ट तकनीक इंजन के कंपन को कम करने में मदद करती है। इससे लंबे समय तक ट्रैक्टर चलाने के दौरान चालक को

अधिक आराम मिलता है और काम की दक्षता भी बढ़ती है।

कुबोटा के प्रीमियम ट्रैक्टर पोर्टफोलियो को मिली नई मजबूती

MU4502 और MU5002 के लॉन्च के बाद कंपनी के प्रीमियम यूटिलिटी ट्रैक्टर पोर्टफोलियो में अब MU4201, MU4501, MU4502, MU5002 और MU5502 जैसे मॉडल शामिल हो गए हैं। कंपनी भारत में फार्मट्रैक, पावरट्रैक और कुबोटा ब्रांड के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों के ट्रैक्टर उपलब्ध करा रही है, जिससे किसानों को अपनी जरूरत और बजट के अनुसार विकल्प चुनने का अवसर मिलता है।

41-50 एचपी श्रेणी पर कंपनी का विशेष फोकस

एस्कॉर्ट्स कुबोटा के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर निखिल नंदा के अनुसार, 41-50 एचपी श्रेणी भारतीय ट्रैक्टर बाजार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसी वजह से कंपनी इस सेगमेंट को मजबूत करने पर लगातार काम कर रही है।

उन्होंने बताया कि नए ट्रैक्टरों को विशेष रूप से प्रगतिशील किसानों, अपने पुराने ट्रैक्टर को अपग्रेड करने वाले ग्राहकों और कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग से जुड़े लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वहीं, कंपनी के डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर अकीरा काटो का कहना है कि इन दोनों ट्रैक्टरों में जापानी इंजीनियरिंग और आधुनिक तकनीक का बेहतरीन संयोजन देखने को मिलेगा, जिससे किसानों को बेहतर प्रदर्शन, अधिक टिकाऊपन और आधुनिक सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा।

महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी ट्रैक्टर: कीमत, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स



महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी: 47 एचपी में खेती के लिए बेस्ट ट्रैक्टर

महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी ट्रैक्टर में 47 एचपी का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो खेती के विभिन्न कार्यों को आसानी से पूरा करने में सक्षम है। यह ट्रैक्टर आधुनिक तकनीक के आधार पर विकसित किया गया है, जिससे यह लंबे समय तक लगातार और भरोसेमंद प्रदर्शन प्रदान करता है। यह ट्रैक्टर जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों के दौरान बेहतरीन क्षमता के साथ काम करता है। इसका इंजन न केवल अधिक शक्ति प्रदान करता है, बल्कि ईंधन की बचत करने में भी मदद करता है, जिससे किसानों की परिचालन लागत कम होती है।

सीएनजी तकनीक से मिलेगी अधिक बचत

महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी की सबसे बड़ी खासियत इसका सीएनजी ईंधन सिस्टम है।

पारंपरिक ईंधन की तुलना में सीएनजी एक अधिक किफायती और पर्यावरण-अनुकूल विकल्प माना जाता है। यह ट्रैक्टर कम उत्सर्जन के साथ बेहतर प्रदर्शन देता है, जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक उत्पादन हासिल करने में मदद मिलती है।

सीएनजी तकनीक के कारण यह ट्रैक्टर पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को भी कम करता है और आधुनिक खेती की जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ट्रांसमिशन सिस्टम और गियरबॉक्स

महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी में 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर का ट्रांसमिशन सिस्टम दिया गया है। यह गियरबॉक्स ट्रैक्टर की गति को बेहतर तरीके से नियंत्रित करने में मदद करता है और विभिन्न कृषि कार्यों के दौरान अधिक दक्षता प्रदान करता है। इसके अलावा, इसमें डुअल क्लच सिस्टम दिया गया है, जो गियर बदलने की प्रक्रिया को आसान बनाता है। इससे चालक को बेहतर नियंत्रण मिलता है और खेतों में काम करना अधिक सुविधाजनक हो जाता है।

आरामदायक स्टीयरिंग और सुरक्षित ब्रेकिंग सिस्टम

यह ट्रैक्टर पावर स्टीयरिंग के साथ आता है, जिससे लंबे समय तक काम करने के दौरान भी चालक को कम थकान महसूस होती है। पावर स्टीयरिंग की मदद से ट्रैक्टर को संकरी जगहों और खेतों में आसानी से मोड़ा जा सकता है। सुरक्षा के लिए इसमें ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स दिए गए हैं, जो बेहतर ब्रेकिंग क्षमता प्रदान करते हैं। यह तकनीक ब्रेक को अधिक समय तक टिकाऊ बनाए रखती है और हर प्रकार की सड़क तथा खेत में सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करती है।

मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम और लिफ्टिंग क्षमता

महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी में 1700 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसकी

मजबूत हाइड्रोलिक प्रणाली भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठाने और संचालित करने में सक्षम है। यह ट्रैक्टर रोटावेटर, कल्टीवेटर, सीड ड्रिल और अन्य कृषि उपकरणों के साथ बेहतर प्रदर्शन करता है, जिससे किसानों की कार्यक्षमता बढ़ती है।

2WD तकनीक के साथ बेहतर नियंत्रण

यह ट्रैक्टर 2WD (टू-व्हील ड्राइव) वेरिएंट में उपलब्ध है, जो सामान्य कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसकी मजबूत बनावट और संतुलित डिजाइन खेतों में बेहतर पकड़ और स्थिरता प्रदान करते हैं। इसके अलावा, ट्रैक्टर का एयर फिल्ट्रेशन सिस्टम इंजन को धूल और मिट्टी से सुरक्षित रखता है, जिससे इंजन की कार्यक्षमता लंबे समय तक बनी रहती है।

महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी की कीमत?

भारतीय बाजार में महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी ट्रैक्टर की कीमत लगभग 9 लाख रुपये से 10 लाख रुपये के बीच है। हालांकि, इसकी वास्तविक कीमत राज्य, शहर और डीलर के अनुसार अलग-अलग हो सकती है।

अगर आप कम ईंधन खर्च, बेहतर माइलेज और दमदार प्रदर्शन वाला आधुनिक ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं, तो महिंद्रा युवो टेक प्लस 575 सीएनजी आपके लिए एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है।

कैप्टन 280 4WD VS कैप्टन 283 4WD-8G: कौन सा ट्रैक्टर आपके लिए सबसे अच्छा है?



कैप्टन 280 4WD

कैप्टन 283 4WD

VS



कैप्टन 280 4WD VS कैप्टन 283 4WD-8G ट्रैक्टर: कीमत, फीचर और स्पेसिफिकेशन्स

कैप्टन ट्रैक्टर की 8th Generation रेंज में कैप्टन 280 4WD और कैप्टन 283 4WD-8G दोनों 28 HP कैटेगरी के कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर हैं। दोनों मॉडल किसानों की अलग-अलग खेती और कृषि कार्यों को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं। दोनों में 4WD सिस्टम दिया गया है, जो खेत में बेहतर ट्रैक्शन देने में मदद करता है। इसके अलावा दोनों ट्रैक्टरों में वाटर-कूल्ड इंजन, ADDC हाइड्रोलिक्स, प्रोजेक्टर हेडलैंप, पावर स्टीयरिंग और ऑयल-इमर्स्ड ब्रेक जैसे फीचर्स मिलते हैं। हालांकि, समान 28 HP पावर के बावजूद दोनों मॉडल पूरी तरह एक जैसे नहीं हैं। इनके इंजन कॉन्फिगरेशन, ट्रांसमिशन, डि, लिफ्टिंग कैपेसिटी और कीमत में अंतर देखने को मिलता है। कैप्टन 280 4WD उन किसानों के लिए उपयोगी विकल्प हो सकता

है जो सरल डिजाइन और सामान्य खेती के कामों के लिए कॉम्पैक्ट 4WD ट्रैक्टर चाहते हैं। वहीं कैप्टन 283 4WD-8G में 3-सिलेंडर इंजन और 9+3 HML+R ट्रांसमिशन जैसे अपग्रेड मिलते हैं। इसलिए दोनों में से सही मॉडल चुनने के लिए केवल हॉर्सपावर देखना पर्याप्त नहीं है, बल्कि इंजन, गियरबॉक्स, हाइड्रोलिक्स, इस्तेमाल होने वाले उपकरण और बजट जैसे पहलुओं पर भी ध्यान देना जरूरी है।

इंजन और परफॉर्मेंस में क्या अंतर है?

कैप्टन 280 4WD और कैप्टन 283 4WD-8G दोनों 28 HP पावर देते हैं, लेकिन इनके इंजन अलग हैं। कैप्टन 280 4WD में 2-सिलेंडर, 1290 CC का वाटर-कूल्ड इंजन दिया गया है, जिसकी रेटेड इंजन स्पीड 2500 RPM बताई गई है। इसका 2-सिलेंडर सेटअप इसे सामान्य कृषि कार्यों

के लिए एक सरल और व्यावहारिक विकल्प बनाता है। दूसरी ओर कैप्टन 283 4WD- 8G में 3-सिलेंडर, 1318 CC वाटर-कूल्ड इंजन मिलता है और इसकी रेटेड स्पीड 2700 RPM है। समान 28 HP होने के बावजूद 283 में एक अतिरिक्त सिलेंडर और थोड़ा अधिक इंजन डिस्प्लेसमेंट मिलता है। 3-सिलेंडर इंजन की वजह से पावर डिलीवरी और इंजन संचालन में अंतर महसूस हो सकता है, खासकर अलग-अलग कृषि कार्यों के दौरान। हालांकि, वास्तविक प्रदर्शन खेत की परिस्थितियों, मिट्टी, उपकरण, ऑपरेटर और ट्रैक्टर के उपयोग पर भी निर्भर करता है। यदि किसान का मुख्य फोकस सामान्य खेती, छोटे खेतों और रोजमर्रा के कृषि कार्यों पर है, तो कैप्टन 280 4WD पर्याप्त हो सकता है। वहीं अधिक इंजन क्षमता और 3-सिलेंडर कॉन्फिगरेशन पसंद करने वाले किसान कैप्टन 283 4WD- 8G पर विचार कर सकते हैं।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स की तुलना

दोनों ट्रैक्टरों के बीच ट्रांसमिशन में एक महत्वपूर्ण अंतर है। कैप्टन 280 4WD में Sliding Mesh ट्रांसमिशन दिया गया है, जिसमें 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर मिलते हैं। Sliding Mesh गियरबॉक्स का डिजाइन अपेक्षाकृत सरल होता है और सामान्य कृषि कार्यों के लिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। दूसरी तरफ कैप्टन 283 4WD-8G में 9+3 HML+R ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर के साथ High, Medium और Low स्पीड रेंज उपलब्ध हैं। यह सिस्टम किसान को अलग-अलग कामों के लिए गति का बेहतर चुनाव करने की सुविधा देता है। उदाहरण के लिए, भारी या धीमी गति वाले खेत कार्यों के लिए Low रेंज उपयोगी हो सकती है, जबकि सामान्य खेती के कामों में Medium रेंज और सड़क पर ट्रांसपोर्ट के दौरान उपयुक्त High रेंज का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस तरह कैप्टन 283 4WD- 8G का ट्रांसमिशन अलग-अलग कृषि परिस्थितियों में अधिक स्पीड फ्लेक्सिबिलिटी प्रदान करता है। वहीं कैप्टन 280 4WD का सरल Sliding Mesh

ट्रांसमिशन उन किसानों के लिए आकर्षक हो सकता है जो एक अपेक्षाकृत सरल और पारंपरिक गियरबॉक्स वाला ट्रैक्टर चाहते हैं।

हाइड्रोलिक्स और कृषि उपकरणों के इस्तेमाल की क्षमता

खेती में ट्रैक्टर की उपयोगिता केवल इंजन पावर से तय नहीं होती। हाइड्रोलिक सिस्टम और लिफ्टिंग क्षमता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर जब ट्रैक्टर के साथ कल्टीवेटर, प्लाऊ, रोटोवेटर या दूसरे माउंटेड इम्प्लीमेंट का इस्तेमाल किया जाता है। कैप्टन 280 4WD और कैप्टन 283 4WD-8G दोनों में ADDC यानी Automatic Draft and Depth Control हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है। यह सिस्टम खेत में उपकरण की कार्य गहराई को नियंत्रित करने में मदद करता है और ऑपरेटर को माउंटेड इम्प्लीमेंट के साथ बेहतर नियंत्रण प्रदान कर सकता है। हालांकि, दोनों मॉडलों की लिफ्टिंग क्षमता में अंतर है। कैप्टन 280 4WD की लिफ्टिंग क्षमता लगभग 600 किलोग्राम बताई गई है, जबकि कैप्टन 283 4WD- 8G की सूचीबद्ध लिफ्टिंग क्षमता लगभग 750 किलोग्राम है। इस वजह से भारी माउंटेड उपकरणों का नियमित इस्तेमाल करने वाले किसानों के लिए कैप्टन 283 4WD- 8G को बढ़त मिलती है। फिर भी किसी ट्रैक्टर के साथ उपकरण खरीदने से पहले उसके वास्तविक वजन और ट्रैक्टर की अनुशंसित क्षमता की जांच करना जरूरी है। बहुत भारी उपकरण हाइड्रोलिक सिस्टम और ट्रैक्टर की हैंडलिंग पर अतिरिक्त दबाव डाल सकते हैं।

ब्रेक, स्टीयरिंग और ऑपरेटर कम्फर्ट

कैप्टन 280 4WD और कैप्टन 283 4WD- 8G में खेती के दौरान ऑपरेटर की सुविधा और नियंत्रण को ध्यान में रखते हुए कई समान फीचर्स दिए गए हैं। दोनों ट्रैक्टरों में ऑयल-इमर्स्ड ब्रेक मिलते हैं, जो धूल, मिट्टी और नमी वाले कृषि वातावरण में उपयोग

SONALIKA

जीतने का
दम

दमदार ट्रैक्टर, जो दे आपके भरोसे को दम

सिकंदर
DI 42 P+



2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nm टॉर्क



ADVANCED 5G
HYDRAULICS
2000 kg
लिफ्ट कॅपेसिटी



के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। ऑयल-इमर्स ब्रेक सिस्टम ब्रेकिंग कंपोनेंट्स को ऑयल के संपर्क में रखता है, जिससे नियमित उपयोग के दौरान बेहतर टिकाऊपन और स्मूथ ब्रेकिंग में मदद मिल सकती है। दोनों मॉडल पावर स्टीयरिंग के साथ आते हैं, जिससे खेत के अंतिम छोर पर ट्रैक्टर मोड़ना या उपकरण के साथ काम करते समय स्टीयरिंग करना आसान हो सकता है। कैप्टन 280 4WD में रबर पैड वाले पैडल, चौड़ा फ्रंट फुट स्पेस, साइड-शिफ्टेड गियर, LED फ्रंट और टेल लाइट तथा प्रोजेक्टर हेडलैंप जैसे फीचर्स मिलते हैं। कैप्टन 283 4WD- 8G में भी ये सुविधाएं उपलब्ध हैं और इसके साथ फ्रंट-ओपनिंग बोनट दिया गया है। इससे इंजन एरिया तक पहुंच बनाकर नियमित निरीक्षण और सर्विसिंग करना आसान हो सकता है।

डिजाइन, डायमेंशन और वजन में अंतर

डिजाइन के मामले में कैप्टन 280 4WD एक कॉम्पैक्ट और सरल लुक वाला ट्रैक्टर है, जबकि कैप्टन 283 4WD- 8G में नया स्टाइलिंग डिजाइन दिया गया है। कैप्टन 280 4WD का उल्लेखित डायमेंशन 2640 x 1070 x 1760 mm है और इसका वजन लगभग 970 किलोग्राम बताया गया है। इसका व्हीलबेस 1550 mm है। वहीं इसके ट्रैक की चौड़ाई 850 mm बताई गई है, जिसे लगभग 1027.4 mm तक एडजस्ट किया जा सकता है। छोटे और सीमित क्षेत्र वाले खेतों में कॉम्पैक्ट डायमेंशन का फायदा मिल सकता है, खासकर जहां ट्रैक्टर को कम जगह में मोड़ना या काम करना हो। कैप्टन 283 4WD- 8G के उपलब्ध विवरण में मुख्य रूप से इसके इंजन से जुड़े स्पेसिफिकेशन जैसे 1318 CC इंजन, 3 सिलेंडर और 2700 RPM रेटेड स्पीड प्रमुखता से दिए गए हैं। इसलिए दोनों ट्रैक्टरों के आकार और वजन की सीधी तुलना करने से पहले लेटेस्ट आधिकारिक स्पेसिफिकेशन की जांच करना बेहतर रहेगा। किसान को अपने खेत के आकार, रास्तों की चौड़ाई, उपकरणों और परिवहन की जरूरत के अनुसार डायमेंशन और वजन को ध्यान में रखना चाहिए।

भारी उपकरणों के लिए कौन-सा ट्रैक्टर बेहतर है और कीमत कितनी है?

अगर किसान का मुख्य काम भारी माउंटेड इम्प्लीमेंट के साथ है, तो कैप्टन 283 4WD- 8G को प्राथमिकता दी जा सकती है। इसका प्रमुख कारण लगभग 750 किलोग्राम की सूचीबद्ध लिफ्टिंग क्षमता है, जबकि कैप्टन 280 4WD की लिफ्टिंग क्षमता लगभग 600 किलोग्राम बताई गई है। इसके अलावा कैप्टन 283 4WD- 8G का 3-सिलेंडर, 1318 CC इंजन और 9+3 HML+R ट्रांसमिशन इसे उन किसानों के लिए आकर्षक बनाते हैं जिन्हें अधिक स्पीड विकल्प और ज्यादा लिफ्टिंग क्षमता की जरूरत है।

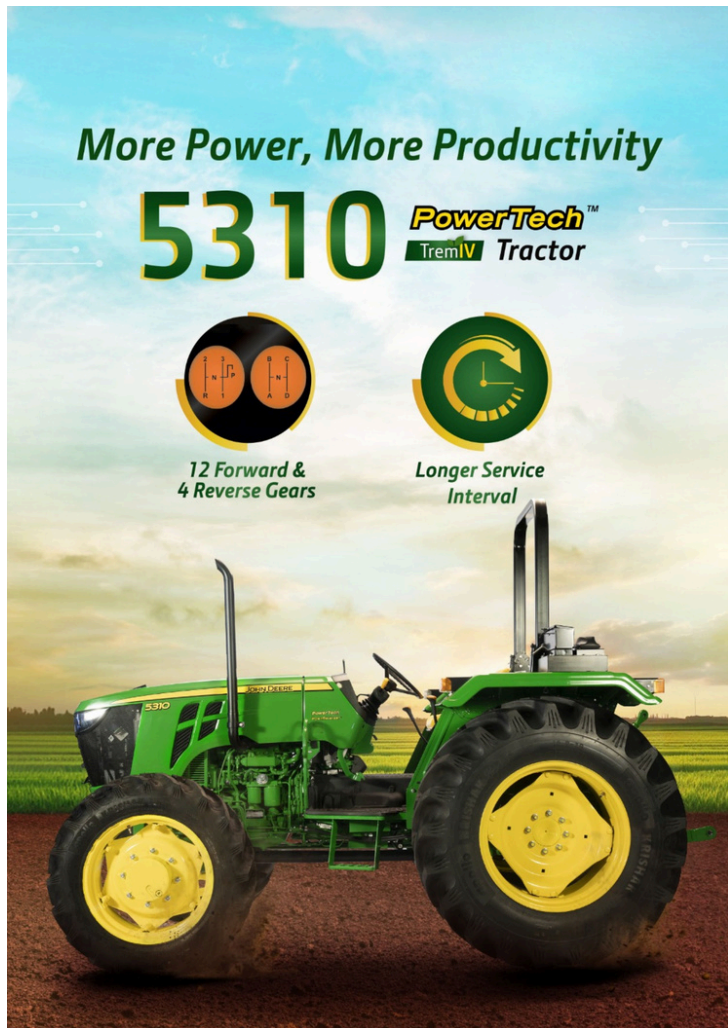
कीमत की बात करें तो कैप्टन 280 4WD की कीमत लगभग ₹4.70 लाख से ₹4.90 लाख के बीच बताई गई है, जबकि कैप्टन 283 4WD- 8G की कीमत लगभग ₹5.47 लाख से ₹5.69 लाख तक बताई गई है। कीमत शहर, डीलर, टैक्स, इंश्योरेंस और समय के अनुसार बदल सकती है। इसलिए खरीदारी से पहले नजदीकी अधिकृत डीलर से ऑन-रोड कीमत और मौजूदा ऑफर की पुष्टि करना जरूरी है। यदि बजट प्राथमिकता है और सामान्य कृषि कार्य करने हैं, तो 280 4WD ज्यादा किफायती विकल्प हो सकता है। वहीं अतिरिक्त बजट के साथ ज्यादा क्षमता और फीचर्स चाहिए हों तो 283 4WD बेहतर विकल्प हो सकता है।

कैप्टन 280 4WD vs कैप्टन 283 4WD-8G: कौन-सा ट्रैक्टर खरीदें?

कैप्टन 280 4WD और कैप्टन 283 4WD- 8G दोनों 28 HP और 4WD कैटेगरी के कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर हैं, लेकिन इनका फोकस थोड़ा अलग नजर आता है। कैप्टन 280 4WD में 2-सिलेंडर, 1290 CC इंजन और 9+3 Sliding Mesh ट्रांसमिशन दिया गया है, इसलिए यह सामान्य खेती के कामों के लिए सरल और बजट-फ्रेंडली विकल्प

बन सकता है। दूसरी ओर कैप्टन 283 4WD-8G में 3-सिलेंडर, 1318 CC इंजन, 2700 RPM रेटेड स्पीड और 9+3 HML+R ट्रांसमिशन मिलता है। इसकी लगभग 750 किलोग्राम की सूचीबद्ध लिफ्टिंग क्षमता भी इसे भारी माउंटेड इम्प्लीमेंट इस्तेमाल करने वाले किसानों के लिए अधिक उपयुक्त बनाती है। इसलिए यदि आपकी प्राथमिकता कम कीमत, सरल डिजाइन और सामान्य 28 HP 4WD ट्रैक्टर है, तो कैप्टन 280 4WD पर विचार किया जा सकता है। यदि आप 3-सिलेंडर इंजन, ज्यादा स्पीड विकल्प और अधिक लिफ्टिंग क्षमता चाहते हैं, तो कैप्टन 283 4WD- 8G बेहतर चुनाव हो सकता है। अंतिम फैसला लेते समय अपने खेत का आकार, मिट्टी, इस्तेमाल होने वाले इम्प्लीमेंट, दैनिक काम और बजट को ध्यान में रखें तथा खरीदने से पहले निर्माता की नवीनतम स्पेसिफिकेशन और डीलर से कीमत की पुष्टि जरूर करें।

आयशर 380 VS स्वराज 735 एफई: कौनसा ट्रैक्टर है ज्यादा दमदार?



आयशर 380 VS स्वराज 735 एफई ट्रैक्टर: कीमत और स्पेसिफिकेशन

भारतीय बाजार में 40 HP श्रेणी के ट्रैक्टर छोटे और मध्यम किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं, क्योंकि इनका इस्तेमाल खेती के कई जरूरी कार्यों के लिए किया जा सकता है। आयशर 380 4WD और स्वराज 735 FE भी इसी पावर कैटेगरी के दो प्रमुख ट्रैक्टर हैं, लेकिन दोनों में कई महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलते हैं। आयशर 380 4WD में जहां 4WD ड्राइव सिस्टम, 2500 CC इंजन और 2177 किलोग्राम का वजन मिलता है, वहीं स्वराज 735 FE अपनी 2734 CC इंजन क्षमता, कम RPM पर बेहतर टॉर्क डिलीवरी और अपेक्षाकृत कम कीमत के कारण किसानों को आकर्षित करता है। दोनों ट्रैक्टरों में 3 सिलेंडर इंजन, 40 HP पावर, 1650 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और ऑयल इमर्स्ड ब्रेक जैसे फीचर्स दिए गए हैं। ऐसे में किसान के लिए यह समझना जरूरी हो जाता है कि पावर, माइलेज, खेती के काम, ड्राइव सिस्टम, कीमत और

उपयोगिता के मामले में इनमें से कौन सा ट्रैक्टर बेहतर है।

आयशर 380 4WD और स्वराज 735 FE का इंजन मुकाबला

इंजन की बात करें तो दोनों ट्रैक्टर 3 सिलेंडर और 40 HP श्रेणी में आते हैं, लेकिन दोनों की इंजन क्षमता और RPM में अंतर है। आयशर 380 4WD में 2500 CC का इंजन दिया गया है, जो 2150 RPM पर काम करता है और करीब 34 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसमें Simpson Water Cooled कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जो इंजन के तापमान को नियंत्रित रखने में सहायता करता है। दूसरी ओर, स्वराज 735 FE में 2734 CC का 3 सिलेंडर इंजन मिलता है, जो केवल 1800 RPM पर रेटेड है और करीब 32.6 HP PTO पावर देता है। इसमें Water Cooled कूलिंग सिस्टम और 3-Stage Oil Bath Type एयर फिल्टर दिया गया है। इंजन क्षमता के लिहाज से स्वराज 735 FE का इंजन बड़ा है, जबकि आयशर 380 4WD अधिक RPM पर काम करता है और PTO पावर भी थोड़ी ज्यादा देता है। इसलिए भारी PTO आधारित उपकरणों के इस्तेमाल में आयशर को बढ़त मिल सकती है, जबकि कम RPM पर काम करने वाला स्वराज इंजन कुछ परिस्थितियों में बेहतर लो-स्पीड परफॉर्मेंस और ईंधन दक्षता दे सकता है।

इंजन पावर और खेती में प्रदर्शन के मामले में कौन आगे?

दोनों ट्रैक्टरों की इंजन पावर 40 HP है, इसलिए केवल HP के आधार पर किसी एक को ज्यादा दमदार कहना उचित नहीं होगा। असली अंतर इंजन की क्षमता, RPM, PTO पावर और ट्रैक्टर के ड्राइव सिस्टम में दिखाई देता है। आयशर 380 4WD की 34 HP PTO पावर इसे रोटावेटर, थ्रेशर और दूसरे PTO आधारित उपकरणों के संचालन में अच्छा विकल्प बनाती है। दूसरी तरफ, स्वराज 735 FE की PTO पावर 32.6 HP है, लेकिन इसका 2734 CC इंजन

1800 RPM पर काम करता है। इसका मतलब है कि स्वराज का इंजन कम RPM पर अपनी पावर देता है, जो कुछ खेती के कार्यों में उपयोगी साबित हो सकता है। यदि किसान का मुख्य काम PTO उपकरणों को चलाना है और उसे अधिक PTO आउटपुट की जरूरत रहती है, तो आयशर 380 4WD थोड़ा आगे दिखाई देता है। वहीं सामान्य खेती, जुताई और रोजमर्रा के कामों के लिए दोनों ट्रैक्टर अच्छी क्षमता रखते हैं।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स में किसका पलड़ा भारी?

ट्रांसमिशन की बात करें तो दोनों ट्रैक्टरों में 8 Forward + 2 Reverse गियर दिए गए हैं, लेकिन इनके ट्रांसमिशन सिस्टम अलग हैं। आयशर 380 4WD में Side Shift Partial Constant Mesh Transmission और Dual Clutch दिया गया है। यह संयोजन किसान को गियर बदलने और PTO आधारित कार्यों के दौरान बेहतर नियंत्रण देने में सहायता करता है। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड करीब 30.77 किलोमीटर प्रति घंटा है। दूसरी ओर, स्वराज 735 FE में Sliding Mesh/PCM Transmission दिया गया है और इसमें Single तथा Dual Clutch का विकल्प मिलता है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 2.30 से 27.80 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 2.73 से 10.74 किलोमीटर प्रति घंटा है। दोनों में गियर की संख्या समान है, लेकिन आयशर की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड थोड़ी ज्यादा है। इसलिए सड़क पर ट्रॉली या परिवहन कार्यों में आयशर 380 4WD को मामूली बढ़त मिलती है।

4WD बनाम 2WD: खेत में कौन ज्यादा सक्षम?

इन दोनों ट्रैक्टरों के बीच सबसे बड़ा अंतर इनके ड्राइव सिस्टम का है। आयशर 380 4WD चार पहिया ड्राइव ट्रैक्टर है, जबकि स्वराज 735 FE

सामान्यतः 2WD कॉन्फिगरेशन में आता है। 4WD सिस्टम का सबसे बड़ा फायदा कठिन खेतों, गीली मिट्टी, ढलान, अधिक भार और कम ट्रैक्शन वाली परिस्थितियों में मिलता है। चारों पहियों तक पावर पहुंचने की वजह से ट्रैक्टर की पकड़ बेहतर हो सकती है और फिसलने की संभावना कम हो सकती है। इसके मुकाबले 2WD ट्रैक्टर सामान्य और सूखी खेती की परिस्थितियों में प्रभावी रहता है और इसका रखरखाव व खरीद लागत अपेक्षाकृत कम हो सकती है। इसलिए यदि किसान के पास भारी मिट्टी, दलदली या गीले खेत हैं और ट्रैक्टर को कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है, तो आयशर 380 4WD स्पष्ट रूप से ज्यादा उपयोगी विकल्प बनता है। सामान्य खेतों और रोजमर्रा के कृषि कार्यों के लिए स्वराज 735 FE पर्याप्त क्षमता प्रदान कर सकता है।

ब्रेक और स्टीयरिंग की तुलना

सुरक्षा और ड्राइविंग सुविधा के मामले में दोनों ट्रैक्टरों में अच्छे फीचर्स दिए गए हैं। आयशर 380 4WD में Multi Disc Oil Immersed Brakes मिलते हैं, जबकि स्वराज 735 FE में भी Oil Immersed Brakes दिए गए हैं। ऑयल इमर्सड ब्रेक लंबे समय तक काम करने वाले ट्रैक्टरों के लिए उपयोगी होते हैं और बेहतर ब्रेकिंग तथा टिकाऊपन प्रदान करने में सहायता करते हैं। स्टीयरिंग की बात करें तो आयशर 380 4WD में Power Steering दिया गया है, जबकि स्वराज 735 FE में Power/Manual Steering का विकल्प मिलता है। पावर स्टीयरिंग लंबे समय तक ट्रैक्टर चलाने, खेत में बार-बार मोड़ लेने और भारी उपकरणों के साथ काम करने के दौरान चालक की मेहनत कम कर सकता है। इस मामले में दोनों अच्छे हैं, लेकिन आयशर में पावर स्टीयरिंग का होना इसे एक सरल और सुविधाजनक विकल्प बनाता है।

PTO सिस्टम में कौन बेहतर है?

PTO आधारित कृषि उपकरणों का इस्तेमाल करने वाले किसानों के लिए यह तुलना काफी महत्वपूर्ण है।

आयशर 380 4WD में Live PTO और Six Splined Shaft दिया गया है, जो 540 RPM @ 1944 ERPM + C20 पर काम करता है। दूसरी ओर, स्वराज 735 FE में Multi Speed PTO दिया गया है, जिसमें 540 और 1000 RPM के विकल्प मिलते हैं। दोनों ट्रैक्टर अलग-अलग प्रकार के PTO उपकरणों के लिए उपयोगी हैं। आयशर में 34 HP PTO पावर उपलब्ध है, जबकि स्वराज में 32.6 HP PTO पावर मिलती है। इसलिए अधिक PTO पावर की जरूरत वाले कामों में आयशर को फायदा मिल सकता है, जबकि 540/1000 RPM वाला Multi Speed PTO स्वराज को अलग-अलग उपकरणों के साथ इस्तेमाल करने में अतिरिक्त लचीलापन देता है। किसान को अपने प्रमुख PTO उपकरणों के हिसाब से इस फीचर का मूल्यांकन करना चाहिए।

हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता की तुलना

हाइड्रोलिक सिस्टम के मामले में दोनों ट्रैक्टर लगभग बराबरी पर हैं। आयशर 380 4WD और स्वराज 735 FE दोनों की लिफ्टिंग क्षमता 1650 किलोग्राम है। आयशर में Draft, Position और Response Control के साथ Category-II Combi Ball लिंक दिए गए हैं। वहीं स्वराज 735 FE में Automatic Depth and Draft Control मिलता है, जो Category-I और Category-II इम्प्लीमेंट पिन के साथ काम कर सकता है। इसका फायदा यह है कि किसान अलग-अलग कृषि उपकरणों को ट्रैक्टर के साथ जोड़कर उनकी गहराई और स्थिति को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर सकते हैं। दोनों ट्रैक्टर रोटोवेटर, कल्टीवेटर, प्लाऊ और दूसरे कृषि उपकरणों को संभालने में सक्षम हैं। इसलिए लिफ्टिंग क्षमता के मामले में दोनों को बराबर माना जा सकता है, हालांकि फीचर सेट और लिंकेज कॉन्फिगरेशन में अंतर है।

फ्यूल टैंक और लंबे समय तक काम करने की क्षमता

फ्यूल टैंक की क्षमता भी लंबे समय तक खेती करने वाले किसानों के लिए महत्वपूर्ण होती है। आयशर 380 4WD में 46 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जबकि स्वराज 735 FE में 48 लीटर की क्षमता मिलती है। यानी टैंक क्षमता के मामले में स्वराज को मामूली बढ़त प्राप्त है। हालांकि केवल टैंक की क्षमता के आधार पर माइलेज का निर्णय नहीं किया जा सकता, क्योंकि वास्तविक ईंधन खपत खेत की मिट्टी, काम के प्रकार, उपकरण के आकार, ट्रैक्टर पर लोड और ऑपरेटर की ड्राइविंग शैली पर निर्भर करती है। स्वराज का कम RPM वाला 2734 CC इंजन और आयशर का 2500 CC इंजन अलग-अलग परिस्थितियों में अलग ईंधन दक्षता प्रदान कर सकते हैं। इसलिए किसान को खरीद से पहले अपने वास्तविक काम के आधार पर दोनों ट्रैक्टरों का फ्यूल कंसम्पशन भी जांचना चाहिए।

वजन और डायमेंशन में अंतर

दोनों ट्रैक्टरों के वजन में काफी अंतर देखने को मिलता है। आयशर 380 4WD का वजन करीब 2177 किलोग्राम है, जबकि स्वराज 735 FE का वजन लगभग 1830 किलोग्राम है। यानी आयशर करीब 347 किलोग्राम ज्यादा भारी है। अधिक वजन और 4WD सिस्टम कठिन परिस्थितियों में ट्रैक्शन और स्थिरता के लिहाज से फायदेमंद हो सकते हैं। आयशर का व्हीलबेस 1968 मिमी, लंबाई 3478 मिमी और चौड़ाई 1617 मिमी है। वहीं स्वराज 735 FE का व्हीलबेस 1945 मिमी, कुल लंबाई 3560 मिमी और चौड़ाई 1790 मिमी है। स्वराज में 380 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस भी दिया गया है। दोनों ट्रैक्टरों के डायमेंशन अलग-अलग हैं, इसलिए किसान को खरीदने से पहले अपने खेत के रास्ते, शेड और कार्यक्षेत्र के अनुसार आकार को ध्यान में रखना चाहिए।

टायर और खेत में पकड़ की तुलना

टायरों की बात करें तो आयशर 380 4WD में फ्रंट में 6.00×16 और रियर में 13.6×28 टायर दिए गए हैं। स्वराज 735 FE में फ्रंट टायर 6.00×16 और रियर में 12.4×28 या 13.6×28 के विकल्प मिलते हैं। लेकिन यहां सबसे महत्वपूर्ण अंतर फिर से ड्राइव सिस्टम का है। आयशर 380 4WD में चारों पहियों को पावर मिलने के कारण कठिन और फिसलन वाली परिस्थितियों में बेहतर ट्रैक्शन मिलने की संभावना रहती है। स्वराज 735 FE का 2WD सेटअप सामान्य खेती और सूखे खेतों में प्रभावी है, लेकिन बहुत गीली या कठिन मिट्टी में 4WD ट्रैक्टर की तुलना में इसकी पकड़ सीमित हो सकती है। इसलिए कठिन भूभाग वाले किसानों के लिए आयशर अधिक उपयुक्त दिखाई देता है।

कीमत में कौन ज्यादा किफायती है?

कीमत के मामले में दोनों ट्रैक्टरों के बीच स्पष्ट अंतर है। आयशर 380 4WD की कीमत लगभग ₹7.64 लाख से ₹7.96 लाख बताई गई है, जबकि स्वराज 735 FE की कीमत करीब ₹6.26 लाख से ₹6.51 लाख है। यानी स्वराज 735 FE खरीदने में आयशर 380 4WD की तुलना में शुरुआती निवेश काफी कम हो सकता है। यह अंतर उन किसानों के लिए महत्वपूर्ण है जिनका बजट सीमित है और जिन्हें सामान्य खेती के कामों के लिए 40 HP ट्रैक्टर चाहिए। वहीं आयशर की अधिक कीमत के पीछे 4WD सिस्टम, ज्यादा वजन और कुछ अतिरिक्त उपयोगिता जैसे पहलू हैं। इसलिए किसान को केवल शुरुआती कीमत नहीं बल्कि ट्रैक्टर के उपयोग, खेत की परिस्थितियों, ईंधन खर्च, रखरखाव और लंबे समय की जरूरतों को ध्यान में रखकर फैसला करना चाहिए।

आयशर 380 4WD VS स्वराज 735 FE: किसके लिए कौन सा ट्रैक्टर बेहतर?

अगर किसान का मुख्य काम सामान्य जुताई, बुवाई, कल्टीवेटर, रोटोवेटर, ट्रॉली और रोजमर्रा के कृषि

कार्य हैं तथा खेत की परिस्थितियां सामान्य हैं, तो स्वराज 735 FE एक आकर्षक विकल्प हो सकता है। इसकी कीमत कम है, 2734 CC का इंजन मिलता है, 1650 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता है और 540/1000 RPM Multi Speed PTO जैसे फीचर्स इसे बहुउपयोगी बनाते हैं। दूसरी ओर, अगर किसान के खेत में भारी मिट्टी, गीली जमीन, ढलान, कम ट्रैक्शन वाली परिस्थितियां या अधिक चुनौतीपूर्ण काम हैं, तो आयशर 380 4WD ज्यादा उपयुक्त हो सकता है। इसका 4WD सिस्टम, 2177 किलोग्राम का वजन, 34 HP PTO पावर और Power Steering इसे कठिन परिस्थितियों में अतिरिक्त क्षमता प्रदान करते हैं।

आयशर 380 4WD या स्वराज 735 FE: कौन सा ज्यादा दमदार?

अगर केवल कठिन परिस्थितियों में काम करने की क्षमता और ट्रैक्शन को आधार बनाया जाए, तो आयशर 380 4WD ज्यादा दमदार विकल्प नजर आता है। इसका सबसे बड़ा कारण 4WD सिस्टम, अधिक वजन और बेहतर PTO पावर है। वहीं अगर कीमत, सामान्य खेती और बजट को प्राथमिकता दी जाए, तो स्वराज 735 FE ज्यादा किफायती और व्यावहारिक विकल्प साबित हो सकता है। दोनों में 40 HP इंजन और 1650 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता होने के कारण सामान्य कृषि कार्यों में दोनों अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। अंतिम चुनाव किसान की जमीन, मिट्टी, खेती के उपकरण, सालाना उपयोग और बजट पर निर्भर करेगा।

PM-RKVY के तहत कृषि को बड़ी सौगात, ₹335 करोड़ से होंगे कई विकास कार्य



(PM-RKVY) के तहत ₹335 करोड़ की मंजूरी

केंद्र सरकार ने कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (PM-RKVY) के तहत ₹335 करोड़ की मंजूरी दी है। इस राशि का उपयोग कृषि विकास योजनाओं, आधुनिक खेती को बढ़ावा देने, किसानों की आय बढ़ाने और कृषि क्षेत्र से जुड़ी विभिन्न परियोजनाओं के क्रियान्वयन पर किया जाएगा। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस संबंध में आयोजित समीक्षा बैठक में योजनाओं की प्रगति का आकलन किया और अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी योजनाओं का लाभ समयबद्ध तरीके से किसानों तक पहुंचाया जाए।

कृषि योजनाओं की प्रगति की हुई समीक्षा नई दिल्ली में आयोजित वर्चुअल समीक्षा बैठक में

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने संबंधित राज्य के कृषि मंत्री, केंद्रीय कृषि सचिव और केंद्र व राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विभिन्न कृषि योजनाओं की प्रगति पर विस्तार से चर्चा की। बैठक का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचे और स्वीकृत राशि का प्रभावी उपयोग हो। बैठक के दौरान प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, बागवानी विकास, कृषि अवसंरचना और अन्य प्रमुख योजनाओं की समीक्षा की गई। साथ ही अधिकारियों को परियोजनाओं में तेजी लाने और निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा करने के निर्देश दिए गए।

PM-RKVY के तहत बेहतर प्रदर्शन की सराहना

समीक्षा बैठक में केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत स्वीकृत राशि का 75 प्रतिशत से अधिक उपयोग समय पर किया गया है। वहीं, योजना के कई अन्य घटकों में भी 80 प्रतिशत से अधिक राशि खर्च की जा चुकी है। उन्होंने इसे योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन का उदाहरण बताते हुए अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि योजनाओं का उद्देश्य केवल बजट आवंटित करना नहीं, बल्कि किसानों तक उसका वास्तविक लाभ पहुंचाना है। इसलिए सभी विभागों को समयबद्ध तरीके से कार्य पूरा करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

बागवानी क्षेत्र में भी बेहतर प्रदर्शन

बैठक के दौरान मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर (MIDH) की भी समीक्षा की गई। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि इस योजना के तहत लगभग 81.73 प्रतिशत राशि का उपयोग किया जा चुका है, जो बेहतर प्रगति का संकेत है। उन्होंने कहा कि बागवानी क्षेत्र में किए जा रहे कार्य किसानों की आय बढ़ाने और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सरकार का मानना है कि फल, सब्जी, मसाला और बागवानी फसलों का विस्तार किसानों को

पारंपरिक खेती की तुलना में अधिक लाभ दिला सकता है। इसलिए इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

आधुनिक कृषि को मिलेगा बढ़ावा

PM-RKVY के तहत स्वीकृत राशि का उपयोग आधुनिक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने, कृषि अवसंरचना विकसित करने, जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य सुधार, कृषि यंत्रीकरण और उत्पादकता बढ़ाने जैसी गतिविधियों पर किया जाएगा। इससे किसानों को नई तकनीकों का लाभ मिलेगा और खेती की लागत कम करने के साथ उत्पादन बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इसके अलावा कृषि विभाग द्वारा किसानों को प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन और विभिन्न योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने पर भी विशेष फोकस रहेगा, ताकि अधिक से अधिक किसान सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकें।

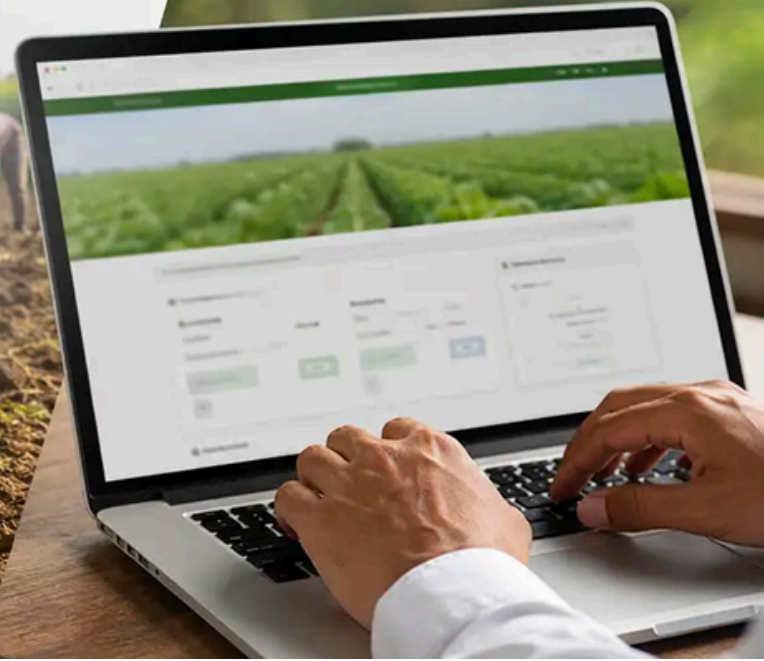
किसानों तक तेजी से पहुंचे योजनाओं का लाभ

समीक्षा बैठक के दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि केंद्र सरकार की सभी कृषि योजनाओं का लाभ पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से किसानों तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और किसानों की आय बढ़ाने के लिए योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सबसे महत्वपूर्ण है। केंद्र सरकार का लक्ष्य कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा देना, किसानों की आय में वृद्धि करना और कृषि को अधिक लाभकारी बनाना है। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत स्वीकृत ₹335 करोड़ की राशि इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है, जिससे कृषि विकास योजनाओं को नई गति मिलने की उम्मीद है।

यूपी में आलू किसानों को मिलेगी बड़ी मदद, उद्यान विभाग ने लॉन्च किया नया पोर्टल



यूपी में आलू किसानों को
मिलेगी बड़ी मदद
उद्यान विभाग ने लॉन्च
किया नया पोर्टल



आलू किसानों के लिए नया पोर्टल लॉन्च

प्रदेश के आलू उत्पादक किसानों को राहत देने के लिए उद्यान विभाग ने potato.uptahorticulture.in नाम से नया पोर्टल लॉन्च किया है। इसके जरिए किसान आलू विकास से जुड़ी विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ ऑनलाइन उठा सकेंगे। उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि सरकार का उद्देश्य किसानों को आलू की खेती, भंडारण और बिक्री के दौरान आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना है। पोर्टल के माध्यम से आवेदन प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया गया है।

भाव गिरावट से किसानों को मिलेगी सुरक्षा

आलू (Potato Tips) की अधिक पैदावार के चलते बाजार में कीमतों में गिरावट आने पर किसानों को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए चालू वित्तीय वर्ष में 1000 करोड़ रुपये की भामाशाह भाव स्थिरता कोष योजना शुरू की गई है। फिलहाल इसके लिए 100 करोड़ रुपये की टोकन राशि स्वीकृत की गई है। योजना

प्रदेश के सभी जिलों में लागू होगी। सरकार का अनुमान है, कि इससे करीब 12 से 14 लाख आलू उत्पादक किसानों को सीधे लाभ मिलेगा।

दो हेक्टेयर तक मिलेगा अनुदान

योजना के तहत एक किसान को अधिकतम दो हेक्टेयर आलू क्षेत्रफल के लिए सहायता दी जाएगी। प्रति हेक्टेयर अधिकतम 240 कुंतल आलू की दर से अनुदान निर्धारित किया गया है। योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को ऑनलाइन आवेदन करना अनिवार्य होगा। ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे। पात्र किसानों को मिलने वाली अनुदान राशि आधार-सीडेड डीबीटी अथवा आधार प्रमाणित बैंक खाते में सीधे भेजी जाएगी।

बिक्री के लिए सौदा प्रपत्र जरूरी

भाव स्थिरता योजना को दो चरणों में लागू किया जाएगा। पहला चरण 1 जनवरी से 15 अप्रैल और दूसरा चरण 1 जुलाई से 31 अक्टूबर तक रहेगा।

योजना का लाभ लेने के लिए क्रेता-विक्रेता सौदा प्रपत्र अनिवार्य दस्तावेज होगा। किसान मंडी, उपमंडी, शीतगृह परिसर या अपने खेत से आलू की बिक्री कर इस योजना का लाभ ले सकेंगे। इससे किसानों को बाजार भाव गिरने की स्थिति में आर्थिक सुरक्षा मिलने की उम्मीद है।

शीतगृह में आलू रखने पर भी राहत

किसानों को दूसरी बड़ी राहत निजी शीतगृहों में रखे आलू के भंडारण शुल्क पर मिलेगी। सरकार ने इस योजना के लिए 1000 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है, जिसमें फिलहाल 100 करोड़ रुपये टोकन राशि के रूप में उपलब्ध कराए गए हैं। योजना के तहत किसानों को प्रति कुंतल 100 रुपये की दर से भंडारण शुल्क में छूट दी जाएगी। इससे आलू को मजबूरी में कम कीमत पर बेचने का दबाव भी कम होगा।

प्रति किसान 20 हजार रुपये तक अनुदान

शीतगृह भंडारण शुल्क में छूट योजना के तहत एक किसान को अधिकतम 20 हजार रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा। भुगतान सीधे आधार से जुड़े बैंक खाते में किया जाएगा। सरकार के अनुसार इस योजना से 15 लाख से अधिक किसानों के लाभान्वित होने की संभावना है। इससे किसानों को फसल सुरक्षित रखने और बेहतर बाजार भाव मिलने तक आलू का भंडारण करने में मदद मिलेगी।

उन्नत बीज खरीद पर मिलेगी छूट

योजना वर्ष 2026-27 के लिए किसानों को उन्नत किस्म और गुणवत्तापूर्ण आलू बीज उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आलू बीज विक्रय दर में छूट योजना भी शुरू की गई है। इसके लिए 5 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। योजना के तहत आलू बीज खरीदने पर किसानों को अधिकतम 1000 रुपये प्रति कुंतल तक की छूट मिलेगी। सरकार को उम्मीद है कि इससे 15 हजार से अधिक किसानों को फायदा होगा और उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार आएगा।

पोर्टल से आवेदन की प्रक्रिया होगी आसान
नई योजनाओं का लाभ लेने के लिए किसानों को ऑनलाइन प्रक्रिया का पालन करना होगा। potato.uphorticulture.in पोर्टल पर योजनाओं से संबंधित जानकारी और आवेदन की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। सरकार का लक्ष्य आलू किसानों को बिक्री, भंडारण और गुणवत्तापूर्ण बीज की खरीद में आर्थिक सहयोग देना है। भाव स्थिरता, शीतगृह शुल्क में छूट और बीज पर अनुदान जैसी तीनों योजनाओं से किसानों की लागत कम करने और आय को स्थिर रखने में मदद मिलने की उम्मीद है।

**गन्ना किसानों के लिए
खुशखबरी: चौड़ी
कतार पद्धति
अपनाने पर मिलेगा
5,000 रुपये प्रति
एकड़ का प्रोत्साहन**



हरियाणा सरकार ने गन्ना किसानों की आय बढ़ाने और चीनी उद्योग को मजबूत बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

4 फीट की दूरी पर गन्ने की खेती करने वाले किसानों को मिलेगा 5,000 रुपये का लाभ

गन्ना प्रौद्योगिकी मिशन के तहत चौड़ी कतार पद्धति को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने प्रोत्साहन राशि में बढ़ोतरी की है। अब किसान यदि 4 फीट की दूरी पर गन्ने की बुवाई करते हैं, तो उन्हें 5,000 रुपये प्रति एकड़ की आर्थिक सहायता दी जाएगी। पहले यह राशि 3,000 रुपये प्रति एकड़ थी। सरकार का मानना है कि चौड़ी कतार पद्धति अपनाने से खेती में आधुनिक उपकरणों का उपयोग आसान होगा। इससे गन्ने की उपज बढ़ने के साथ-साथ चीनी की रिकवरी में भी सुधार होगा। किसानों को इस योजना से जोड़ने के लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान भी चलाया जाएगा।

किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए लगेगी सुझाव पेटियां

किसानों और शुगर मिलों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने के लिए सभी गन्ना तुलाई केंद्रों पर सुझाव पेटियां लगाई जाएंगी। किसान अपनी समस्याओं, शिकायतों और सुझावों को लिखकर इन पेटियों में जमा कर सकेंगे। सरकार ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे नियमित रूप से इन सुझावों की समीक्षा करें और शिकायतों का समय पर समाधान सुनिश्चित करें। इसके अलावा, शुगर मिलों के प्रबंध निदेशकों को हर चार महीने में किसानों के साथ बैठक आयोजित करने के लिए भी कहा गया है।

उन्नत गन्ना किस्मों को बढ़ावा देने पर सरकार का फोकस

राज्य सरकार अधिक उत्पादन देने वाली गन्ने की नई किस्मों को किसानों तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत नई किस्मों को हरियाणा में लागू करने में किसी प्रकार की देरी नहीं होनी चाहिए। यदि राज्य में किसी उन्नत किस्म के बीज की उपलब्धता कम होती है, तो अन्य राज्यों से भी बीज उपलब्ध कराने

की व्यवस्था की जाएगी। इससे किसानों को बेहतर गुणवत्ता वाले बीज आसानी से मिल सकेंगे।

बेहतर बीज उत्पादन के लिए स्थापित होंगी चार टिशू कल्चर लैब

गुणवत्तापूर्ण गन्ना बीज उपलब्ध कराने के लिए हरियाणा सरकार चार नई टिशू कल्चर लैब स्थापित करने जा रही है। ये लैब रोहतक, महम, पानीपत और पलवल-करनाल की शुगर मिलों में विकसित की जाएंगी। टिशू कल्चर तकनीक के जरिए रोगमुक्त और उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार किए जाएंगे। इससे गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने और चीनी की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिलेगी।

कैथल में शुरू होगा गन्ना हार्वेस्टिंग मशीनों का पायलट प्रोजेक्ट

गन्ने की कटाई के दौरान श्रमिकों की कमी किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है। इस समस्या को दूर करने के लिए कैथल शुगर मिल में गन्ना हार्वेस्टिंग मशीनों का पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया जाएगा।

इस योजना के तहत मशीनों के माध्यम से खेतों में गन्ने की कटाई की जाएगी और फसल को सीधे शुगर मिल तक पहुंचाया जाएगा। यदि यह परियोजना सफल रहती है, तो इसे राज्य की अन्य शुगर मिलों में भी लागू किया जा सकता है।

हरियाणा की 10 सहकारी शुगर मिलों की कुल क्षमता 30,650 टीसीडी

हरियाणा में वर्तमान समय में 10 सहकारी शुगर मिलें संचालित हो रही हैं। इनमें पानीपत, रोहतक, करनाल, शाहाबाद, गोहाना, सोनीपत, जींद, पलवल, महम और कैथल की शुगर मिलें शामिल हैं। इन सभी मिलों की कुल पेराई क्षमता 30,650 टीसीडी (टन क्रशिंग प्रति दिन) है। इन मिलों में चीनी उत्पादन के साथ-साथ बिजली और एथेनॉल का भी

उत्पादन किया जा रहा है। सरकार ने मशीनों के नियमित रखरखाव और आवश्यक उपकरणों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

शुगर मिलों की आय बढ़ाने के लिए किए जाएंगे नए प्रयास

रोहतक शुगर मिल में चीनी की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। निर्धारित गुणवत्ता मानकों को पूरा करने के बाद इस चीनी का उपयोग फार्मास्यूटिकल कंपनियों द्वारा सिरप निर्माण में किया जा सकता है। इसके अलावा, सरकार ऑफ-सीजन में भी बिजली उत्पादन जारी रखने की संभावनाओं पर विचार कर रही है। मिलों की आय बढ़ाने के लिए नए बाजार विकसित करने और अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

गन्ना किसानों के लिए क्या है सबसे बड़ी सीख?

यदि हरियाणा के किसान 4 फीट की दूरी पर चौड़ी कतार पद्धति से गन्ने की खेती करते हैं, तो वे 5,000 रुपये प्रति एकड़ की प्रोत्साहन राशि का लाभ उठा सकते हैं। इसके साथ ही उन्नत बीज, टिशू कल्चर तकनीक और आधुनिक हार्वेस्टिंग मशीनों जैसी सुविधाएं भी किसानों को उपलब्ध कराई जाएंगी।

योजना से जुड़ी पात्रता, आवेदन प्रक्रिया और अन्य जानकारी के लिए किसान अपने नजदीकी कृषि विभाग या संबंधित सहकारी शुगर मिल से संपर्क कर सकते हैं। सरकार का लक्ष्य गन्ना किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ राज्य के चीनी उद्योग को भी अधिक मजबूत और आधुनिक बनाना है।

बकरी पालन: बरसात में बकरियों को खिलाएं इन पेड़ों की पत्तियां, पाचन और सेहत में होगा सुधार



बकरी पालन (Bakri Palan) को लाभदायक व्यवसाय बनाने के लिए केवल अच्छी नस्ल की बकरियां रखना ही पर्याप्त नहीं है। पशुओं को उनकी उम्र, वजन और उत्पादन क्षमता के अनुसार संतुलित एवं पौष्टिक आहार देना भी बेहद जरूरी है। खासकर दूध देने वाली बकरियों और तेजी से बढ़ रहे बच्चों के लिए पर्याप्त पोषण उनकी सेहत और उत्पादन पर सीधा असर डालता है। हरे चारे के साथ कुछ पेड़ों की पौष्टिक पत्तियों को भी आहार में शामिल किया जा सकता है। ये पत्तियां बकरियों को अतिरिक्त पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ उनके सामान्य स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में मदद कर सकती हैं।

बकरियों के आहार में पेड़ों की पत्तियां क्यों शामिल करें?

बकरियां पेड़ों की पत्तियां और कोमल टहनियां खाना

पसंद करती हैं। कई पेड़ों की पत्तियों में प्रोटीन, खनिज और अन्य जैव सक्रिय यौगिक पाए जाते हैं, जो संतुलित आहार का हिस्सा बनने पर पशुओं के पोषण में योगदान दे सकते हैं। केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (CIRG), मथुरा के विशेषज्ञों के अनुसार, बकरी के आहार में ऐसा चारा शामिल होना चाहिए जो केवल पेट भरने के बजाय उसके पोषण और स्वास्थ्य की जरूरतों को भी पूरा करे। विशेष रूप से जब बकरियों को पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तापूर्ण चारा नहीं मिल पाता, तब उपलब्ध पौष्टिक पत्तियां आहार में उपयोगी पूरक साबित हो सकती हैं।

बरसात के मौसम में पत्तियों का महत्व बढ़ जाता है

बारिश के मौसम में खेतों में उगने वाले हरे चारे में नमी की मात्रा काफी बढ़ जाती है। बहुत अधिक नमी वाला चारा यदि जरूरत से ज्यादा मात्रा में खिलाया जाए तो कुछ पशुओं में पाचन संबंधी परेशानी या दस्त की समस्या हो सकती है। ऐसे समय में सूखी या अपेक्षाकृत कम नमी वाली पेड़ों की पत्तियां आहार का एक उपयोगी हिस्सा बन सकती हैं। हालांकि, पत्तियों को साफ और स्वस्थ पेड़ों से ही लेना चाहिए तथा किसी भी प्रकार की फफूंद, कीटनाशक अवशेष या सड़न वाली पत्तियां पशुओं को नहीं खिलानी चाहिए।

नीम की पत्तियां हो सकती हैं उपयोगी

नीम की पत्तियों का इस्तेमाल पारंपरिक रूप से पशुपालन में किया जाता रहा है। इनमें विभिन्न प्राकृतिक जैवसक्रिय यौगिक पाए जाते हैं। सीमित मात्रा में और संतुलित आहार के हिस्से के रूप में नीम की पत्तियां बकरियों को दी जा सकती हैं। हालांकि, इन्हें अत्यधिक मात्रा में खिलाने के बजाय अन्य चारे के साथ संतुलित तरीके से देना बेहतर है। खासकर गर्भवती, बीमार या कमजोर पशुओं को किसी भी विशेष पत्ती की अधिक मात्रा देने से पहले पशु चिकित्सक या पशु पोषण विशेषज्ञ की सलाह लेना उचित रहेगा।

अमरूद की पत्तियां भी बन सकती हैं आहार

का हिस्सा

अमरूद की पत्तियों में फाइबर और अन्य प्राकृतिक यौगिक पाए जाते हैं। बकरियां इसकी कोमल पत्तियों को आसानी से खा सकती हैं। यदि अमरूद के पेड़ की पत्तियां साफ और रसायन मुक्त हों, तो उन्हें सीमित मात्रा में हरे और सूखे चारे के साथ खिलाया जा सकता है। इससे बकरियों के दैनिक आहार में विविधता आती है और उन्हें अलग-अलग स्रोतों से पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।

मोरिंगा यानी सहजन की पत्तियां पोषण से भरपूर

मोरिंगा यानी सहजन की पत्तियां बकरियों के लिए एक पौष्टिक पत्तीदार चारा मानी जाती हैं। इनमें प्रोटीन और कई अन्य पोषक तत्व पाए जाते हैं। सहजन की कोमल पत्तियों और नरम टहनियों को बकरियां आसानी से खा लेती हैं। इन्हें हरे चारे के साथ मिलाकर देने से आहार की पौष्टिकता बढ़ाई जा सकती है। हालांकि, मोरिंगा सहित किसी भी एक प्रकार के चारे को पूरे आहार का विकल्प नहीं बनाना चाहिए।

गूलर और अरडू की पत्तियां भी अच्छे विकल्प

यदि नीम, अमरूद या सहजन की पत्तियां उपलब्ध नहीं हैं, तो गूलर और अरडू जैसी प्रजातियों की पत्तियों को भी चारे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इन पेड़ों की साफ और ताजी पत्तियां बकरियों के आहार में विविधता ला सकती हैं। पशुपालकों को ध्यान रखना चाहिए कि पत्तियां ऐसे पेड़ों से न ली जाएं जिन पर हाल ही में कीटनाशक या किसी अन्य रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया हो।

क्या पेड़ों की पत्तियां पेट के कीड़ों से बचाती हैं?

बरसात के दौरान गीला वातावरण, दूषित पानी और स्वच्छता की कमी के कारण बकरियों में आंतरिक परजीवियों का खतरा बढ़ सकता है। पेट में कीड़े होने पर पशुओं की भूख, वजन बढ़ने और शरीर की सामान्य स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। कुछ पौधों की पत्तियों में मौजूद प्राकृतिक यौगिक परजीवियों के खिलाफ संभावित प्रभाव दिखा सकते हैं, लेकिन केवल पत्तियां खिलाकर कृमि संक्रमण का इलाज करना उचित नहीं है। यदि बकरी में लगातार दस्त, कमजोरी, वजन कम होना, भूख में कमी या अन्य लक्षण दिखाई दें, तो पशु चिकित्सक से जांच कराकर उचित कृमिनाशक उपचार कराना चाहिए।

बकरियों को पत्तियां खिलाने का सही तरीका

बकरियां प्राकृतिक रूप से पेड़ों की पत्तियां और कोमल टहनियां खाना पसंद करती हैं। इसलिए साफ पेड़ों से काटी गई छोटी और नरम टहनियों को उनके सामने रखा जा सकता है। इससे बकरियां अपनी पसंद के अनुसार पत्तियां खा सकती हैं। पत्तियों को खिलाने से पहले उन्हें अच्छी तरह जांच लेना चाहिए और मिट्टी, फफूंद, सड़ी हुई पत्तियां या रासायनिक अवशेष वाली सामग्री को हटा देना चाहिए। पहली बार किसी नई पत्ती को आहार में शामिल करते समय कम मात्रा से शुरुआत करना बेहतर होता है, ताकि पशुओं की प्रतिक्रिया देखी जा सके।

केवल पेड़ों की पत्तियों पर निर्भर न रहें

पेड़ों की पत्तियां बकरियों के लिए पूरक चारे का काम कर सकती हैं, लेकिन इन्हें संपूर्ण आहार का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। बकरियों को हरा चारा, सूखा चारा और जरूरत के अनुसार दाना या संतुलित पशु आहार भी देना जरूरी है। दूध देने वाली, गर्भवती, बढ़ते बच्चों और प्रजनन के लिए रखे गए पशुओं की पोषण संबंधी जरूरतें अलग-अलग होती हैं। इसलिए उनके अनुसार आहार की मात्रा और संरचना तय करनी चाहिए। साथ ही बकरियों के लिए हर समय साफ और ताजा पानी उपलब्ध होना चाहिए।

संतुलित आहार के साथ रखें स्वास्थ्य का ध्यान

बकरी पालन (Goat Farming) में बेहतर उत्पादन के लिए केवल चारे पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है। संतुलित आहार के साथ साफ-सफाई, पर्याप्त पानी, समय पर टीकाकरण, नियमित स्वास्थ्य जांच और पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार कृमिनाशक उपचार भी जरूरी है। हरे चारे के साथ उपयुक्त पेड़ों की पौष्टिक पत्तियों को सीमित और संतुलित मात्रा में शामिल करने से बकरियों के आहार में विविधता बढ़ाई जा सकती है। सही पोषण प्रबंधन से पशुओं की सेहत बनाए रखने और दूध, मीट तथा बच्चों की ग्रोथ से जुड़े उत्पादन लक्ष्यों को बेहतर ढंग से हासिल करने में मदद मिल सकती है।

पशुपालक इन बातों का रखें ध्यान

पेड़ों की पत्तियां बकरियों के लिए उपयोगी चारा हो सकती हैं, लेकिन हर पेड़ की पत्ती पशुओं के लिए सुरक्षित नहीं होती। इसलिए केवल पहचानी हुई और सुरक्षित प्रजातियों की पत्तियां ही खिलाएं। कीटनाशक से उपचारित, फफूंद लगी या सड़ी हुई पत्तियां बिल्कुल न दें। किसी भी पत्ती को बड़ी मात्रा में खिलाने के बजाय धीरे-धीरे आहार में शामिल करें। यदि पशु में पत्ती खाने के बाद दस्त, भूख कम होना या कोई असामान्य लक्षण दिखाई दे, तो उसे देना बंद करके विशेषज्ञ की सलाह लें। इस तरह उचित मात्रा में पत्तियों को संतुलित आहार के साथ शामिल करना बकरी पालन की पोषण व्यवस्था को बेहतर बनाने का कम लागत वाला विकल्प हो सकता है।

भारत की 10 प्रमुख देशी गायों की नस्लें: जानें विशेषताएं, दूध उत्पादन क्षमता और पालन के फायदे



भारत की 10 प्रमुख देशी गायों की नस्लें

पशुपालन-पशुचारा



भारत की 10 प्रमुख देशी गायों की नस्लें - जानें, पूरी जानकारी

भारत विश्व के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में से एक है। यहां पशुपालन केवल एक व्यवसाय नहीं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। कृषि कार्यों के साथ-साथ पशुपालन किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करता है और उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाता है। देश में विभिन्न प्रकार की गायों की नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें देशी नस्लों का विशेष महत्व है। भारतीय नस्ल की गायें अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता, कम रखरखाव लागत, जलवायु अनुकूलन क्षमता और उच्च गुणवत्ता वाले A2 दूध के लिए जानी जाती हैं। आज के समय में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण देशी गायों के दूध की मांग तेजी से बढ़ रही है। A2 दूध को पाचन के लिए बेहतर माना जाता है और इसमें कई आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। यही कारण है कि देशी नस्ल की गायों का पालन किसानों के लिए लाभदायक साबित

हो रहा है। आइए भारत की प्रमुख देशी गायों की नस्लों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

1. साहीवाल गाय

साहीवाल भारत की सबसे प्रसिद्ध और सर्वाधिक दूध देने वाली देशी नस्लों में से एक मानी जाती है। इसका मूल क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का साहीवाल जिला है, जिसके नाम पर इस नस्ल का नाम रखा गया है। भारत में यह नस्ल मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर भारत के कई हिस्सों में पाई जाती है। साहीवाल गाय का शरीर मजबूत, त्वचा ढीली और रंग लाल-भूरा या महोगनी लाल होता है। कुछ पशुओं में सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं। इस नस्ल की गायें गर्मी और परजीवी रोगों को सहन करने में सक्षम होती हैं। इनके थन अच्छी तरह विकसित होते हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन क्षमता अधिक रहती है। सामान्य परिस्थितियों में साहीवाल

Global
4WD
Expert

Solis
IN COLLABORATION WITH
YANMAR

INTRODUCING THE ALL-NEW SOLIS **S90**

THE SUPREME POWER OF ADVANCED JAPANESE TECHNOLOGY

**POWERPACK
PERFORMER**

WITH **12F+12R**
SPEEDS

**NEW S-TECH
ENGINE**

WITH **90HP**
HIGH POWER

**S-BOOST
HYDRAULICS**

WITH UPTO
3500KG
LIFT CAPACITY

AC CABIN

WITH **WIDE &
OPEN** PLATFORM



सामान्य परिस्थितियों में साहीवाल गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध दे सकती है। बेहतर प्रबंधन और संतुलित आहार मिलने पर कई गायें इससे भी अधिक उत्पादन करने में सक्षम होती हैं। डेयरी व्यवसाय के लिए यह नस्ल किसानों की पहली पसंद मानी जाती है।

2. गिर गाय

गिर गाय भारत की सबसे लोकप्रिय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध देशी नस्लों में शामिल है। इसका उद्गम गुजरात के गिर वन क्षेत्र में हुआ है। अपनी उत्कृष्ट दुग्ध उत्पादन क्षमता और मजबूत प्रतिरोधक शक्ति के कारण यह नस्ल ब्राजील, अमेरिका, मैक्सिको और अन्य देशों में भी काफी लोकप्रिय हो चुकी है। गिर गाय की पहचान इसके लंबे लटकते कान, उभरे हुए माथे और अर्धचंद्राकार मुड़े हुए सींगों से की जाती है। इसका रंग लाल, सफेद धब्बेदार लाल या गहरा भूरा हो सकता है। यह नस्ल सामान्यतः प्रतिदिन 15 से 20 लीटर दूध देती है। इसके दूध में वसा की मात्रा लगभग 4.5 से 5 प्रतिशत तक होती है। गिर गायों की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अच्छी होती है और ये कठिन जलवायु परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं।

3. लाल सिंधी गाय

लाल सिंधी नस्ल का उद्गम पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में हुआ था, लेकिन वर्तमान में भारत के कई राज्यों में इसका पालन किया जाता है। यह नस्ल अपने उच्च गुणवत्ता वाले दूध और अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है। लाल सिंधी गाय का रंग गहरे लाल से लेकर हल्के लाल और पीले-लाल रंग तक हो सकता है। शरीर मजबूत तथा सींग अपेक्षाकृत छोटे और मोटे होते हैं। कुछ पशुओं के माथे और गर्दन पर सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं। यह नस्ल औसतन 10 से 15 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन कर सकती है। एक दुग्धकाल में इसका कुल दूध उत्पादन 1100 से 2600 किलोग्राम तक हो सकता है। इसके दूध में लगभग 4.5 प्रतिशत वसा पाई जाती है, जिससे यह डेयरी उद्योग के लिए लाभदायक मानी जाती है।

4. हरियाणा गाय

हरियाणा नस्ल उत्तर भारत की प्रमुख दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल है। इसका उपयोग दूध उत्पादन के साथ-साथ कृषि कार्यों के लिए शक्तिशाली बैलों के उत्पादन में भी किया जाता है। इस नस्ल का प्रमुख प्रजनन क्षेत्र हरियाणा राज्य और आसपास के इलाके हैं। हरियाणा गाय का रंग सामान्यतः सफेद या हल्का धूसर होता है। शरीर मजबूत, पैर लंबे और सींग छोटे होते हैं। यह नस्ल कठोर जलवायु में भी आसानी से जीवित रह सकती है।

दूध उत्पादन की बात करें तो हरियाणा गाय प्रतिदिन लगभग 8 से 15 लीटर तक दूध दे सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह नस्ल अपनी सहनशीलता और कम रखरखाव लागत के कारण काफी लोकप्रिय है।

5. कांकरेज गाय

कांकरेज नस्ल गुजरात और राजस्थान की प्रमुख देशी गायों में से एक है। इसका नाम गुजरात के कांकरेज क्षेत्र से लिया गया है। यह नस्ल दूध उत्पादन और कृषि कार्य दोनों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। कांकरेज गाय का रंग सिल्वर ग्रे, आयरन ग्रे या स्टील ब्लैक होता है। इसके बड़े और वीणा के आकार के सींग इसकी विशेष पहचान हैं। शरीर मजबूत और मांसपेशियां विकसित होती हैं। यह नस्ल सामान्यतः 10 से 15 लीटर दूध प्रतिदिन देती है, जबकि कुछ उच्च गुणवत्ता वाली गायें 18 से 20 लीटर तक दूध देने में सक्षम होती हैं। यह नस्ल गर्मी, टिक जनित रोगों और कई संक्रामक बीमारियों के प्रति अच्छी प्रतिरोधक क्षमता रखती है।

6. हल्लीकर गाय

हल्लीकर नस्ल दक्षिण भारत विशेषकर कर्नाटक राज्य की प्रमुख नस्लों में गिनी जाती है। इसे मैसूर नस्ल के नाम से भी जाना जाता है। यह नस्ल मुख्य रूप से कृषि कार्यों और सीमित दुग्ध उत्पादन के लिए जानी जाती है। हल्लीकर गाय का रंग सफेद, धूसर या हल्का भूरा होता है। इसके सींग लंबे और

पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। शरीर चुस्त-दुरुस्त और सहनशील होता है। यह नस्ल प्रतिदिन लगभग 5 से 8 लीटर दूध देती है। हालांकि इसका दुग्ध उत्पादन अन्य नस्लों की तुलना में कम है, लेकिन इसके दूध में वसा की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक होती है।

7. बद्री गाय

बद्री गाय उत्तराखंड की एक महत्वपूर्ण देशी नस्ल है, जिसे राज्य की पहली प्रमाणित देशी गाय नस्ल का दर्जा प्राप्त है। यह मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी आसानी से जीवन यापन कर सकती है। बद्री गाय आकार में छोटी, स्वभाव से शांत और कम संसाधनों में जीवित रहने वाली नस्ल है। इसका रंग काला, भूरा, लाल, सफेद या धूसर हो सकता है। इस नस्ल के पशुओं में विशिष्ट कूबड़ और लंबी पूंछ देखी जाती है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार बद्री गाय के दूध में A2 बीटा-केसीन प्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक पाई जाती है। यह गाय प्रतिदिन लगभग 1 से 3 लीटर दूध देती है, लेकिन इसके दूध की गुणवत्ता इसे विशेष बनाती है।

8. पुंगनूर गाय

पुंगनूर गाय आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध बौनी नस्ल है और इसे दुनिया की सबसे छोटी गाय नस्लों में से एक माना जाता है। अपने छोटे आकार और कम रखरखाव खर्च के कारण यह किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है। पुंगनूर गाय विभिन्न रंगों में पाई जाती है, जिनमें सफेद, लाल, भूरा और काला प्रमुख हैं। इसका शरीर छोटा लेकिन मजबूत होता है। यह नस्ल सीमित चारे में भी अच्छी तरह जीवित रह सकती है। यह गाय प्रतिदिन लगभग 3 से 5 लीटर दूध देती है। इसके दूध में वसा की मात्रा लगभग 8 प्रतिशत तक हो सकती है, जो सामान्य गायों की तुलना में काफी अधिक है। यही कारण है कि इसका दूध बाजार में विशेष मांग रखता है।

9. राठी गाय

राठी गाय राजस्थान की एक प्रसिद्ध दुग्ध नस्ल है,

जिसका उद्गम बीकानेर और गंगानगर क्षेत्र में माना जाता है। यह नस्ल कठोर मरुस्थलीय परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए जानी जाती है। राठी गाय का रंग सामान्यतः चितकबरा होता है और इसकी शारीरिक बनावट साहीवाल नस्ल से काफी मिलती-जुलती है। यह नस्ल अत्यधिक गर्मी और सीमित चारे की स्थिति को भी आसानी से सहन कर सकती है।

उचित देखभाल और पोषण मिलने पर राठी गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध देने में सक्षम होती है। यह नस्ल राजस्थान के पशुपालकों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती है।

10. थारपारकर गाय

थारपारकर भारत और पाकिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक प्रमुख देशी नस्ल है। भारत में इसका पालन मुख्य रूप से राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्रों में किया जाता है। यह नस्ल गर्म और शुष्क जलवायु के लिए विशेष रूप से अनुकूलित है। थारपारकर गाय का रंग सफेद या हल्का धूसर होता है। इसका शरीर मजबूत, पैर सुदृढ़ और त्वचा ढीली होती है। यह नस्ल कम पानी और सीमित चारे में भी अच्छा प्रदर्शन करती है। थारपारकर गाय प्रतिदिन लगभग 10 से 18 लीटर दूध उत्पादन कर सकती है। इसके दूध की गुणवत्ता अच्छी होती है और यह नस्ल डेयरी तथा प्रजनन दोनों उद्देश्यों के लिए उपयोगी मानी जाती है।

निष्कर्ष

भारत की देशी गायों की नस्लें केवल दूध उत्पादन का स्रोत नहीं हैं, बल्कि देश की कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जैव विविधता की महत्वपूर्ण धरोहर भी हैं। साहीवाल, गिर, लाल सिंधी, हरियाणा, कांकरेज, हल्लीकर, बद्री, पुंगनूर, राठी और थारपारकर जैसी नस्लें अपनी विशिष्ट विशेषताओं, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उच्च गुणवत्ता वाले A2 दूध के कारण विशेष महत्व

रखती हैं।

आज जब स्वास्थ्यवर्धक दूध और टिकाऊ पशुपालन की मांग बढ़ रही है, तब देशी गायों का संरक्षण और संवर्धन पहले से अधिक आवश्यक हो गया है। यदि

कम खर्च में तैयार करें पशुओं का पौष्टिक चारा, दूध उत्पादन भी बढ़ेगा



गर्मियों में पशुओं के लिए पौष्टिक चारा बनाना क्यों जरूरी

गर्मियों के मौसम में पशुपालकों को सबसे बड़ी चुनौती हरे चारे की कमी और महंगे पशु आहार की होती है। तापमान बढ़ने के साथ खेतों में हरा चारा कम हो जाता है, जबकि बाजार में मिलने वाला संतुलित पशु आहार काफी महंगा पड़ता है। इसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य, दूध उत्पादन और वजन पर दिखाई देता है।

कई बार पोषण की कमी के कारण पशु कमजोर होने लगते हैं और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। ऐसे समय में किसान यदि कम लागत में पौष्टिक चारा तैयार कर लें, तो पशुपालन को लाभकारी बनाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार एक ऐसी वैज्ञानिक तकनीक है, जो सूखे भूसे

को पौष्टिक पशु आहार में बदल सकती है। यह तरीका आसान होने के साथ-साथ बेहद किफायती भी माना जाता है।

देश में चारे की कमी बनी बड़ी समस्या

भारत दुनिया के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में शामिल है। देश में 53 करोड़ से अधिक पशुधन मौजूद है, लेकिन इनके लिए पर्याप्त पौष्टिक चारे की उपलब्धता आज भी बड़ी समस्या बनी हुई है। अधिकांश किसान गेहूं और धान के भूसे पर निर्भर रहते हैं, क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है। हालांकि, सामान्य भूसे में पोषक तत्व बहुत कम होते हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा करीब 3 प्रतिशत या उससे भी कम होती है, जिससे पशुओं की पोषण जरूरत पूरी नहीं हो पाती। लगातार ऐसे चारे का उपयोग करने से पशुओं की वृद्धि रुक सकती है और दूध उत्पादन भी प्रभावित होता है। यही वजह है, कि वैज्ञानिक लंबे समय से भूसे की गुणवत्ता सुधारने पर जोर दे रहे हैं। यूरिया उपचार इसी दिशा में एक कारगर उपाय माना जाता है।

यूरिया उपचारित भूसा क्यों है बेहतर विकल्प

विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार करने से उसकी पौष्टिकता कई गुना बढ़ जाती है। इस प्रक्रिया में यूरिया से बनने वाली अमोनिया भूसे के रेशों को मुलायम बनाती है और उसकी पाचन क्षमता को बेहतर करती है। सामान्य भूसे में जहां प्रोटीन की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होती है, वहीं उपचार के बाद यह 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। इसके अलावा भूसे की ऊर्जा क्षमता और पाचनशीलता में भी सुधार होता है। उपचारित भूसा स्वाद में भी बेहतर हो जाता है, जिससे पशु इसे आसानी से खाते हैं। यही कारण है कि पशुपालकों के बीच यह तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कम खर्च में पौष्टिक चारा तैयार होने से किसानों की लागत घटती है और पशुओं को बेहतर

पोषण मिल पाता है।

उपचारित भूसे से पशुपालकों को मिलते हैं कई फायदे

यूरिया उपचारित भूसा पशुओं के लिए कई तरह से फायदेमंद साबित होता है। उपचार के बाद भूसा नरम और स्वादिष्ट हो जाता है, जिससे पशु इसे चाव से खाते हैं और चारे की बर्बादी कम होती है। अधिक पोषण मिलने से पशुओं की सेहत बेहतर रहती है और दूध उत्पादन में भी सुधार देखा जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह का चारा खिलाने से महंगे दाने और सघन आहार की जरूरत लगभग 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इससे पशुपालकों का खर्च घटता है और मुनाफा बढ़ता है। बछड़ों और बछड़ियों को यह चारा खिलाने पर उनका वजन तेजी से बढ़ता है और शरीर मजबूत बनता है। गर्मियों में जब हरे चारे की भारी कमी होती है, तब यह तकनीक पशुपालकों के लिए बड़ी राहत साबित हो सकती है।

सामान्य और उपचारित भूसे में कितना अंतर

सामान्य भूसे और यूरिया उपचारित भूसे के बीच पोषण स्तर में बड़ा अंतर देखने को मिलता है। साधारण भूसे में प्रोटीन केवल 3 से 3.5 प्रतिशत तक होता है, जबकि उपचारित भूसे में यह बढ़कर 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच जाता है। पाच्य प्रोटीन की मात्रा भी काफी बढ़ जाती है, जिससे पशु इसे बेहतर तरीके से पचा पाते हैं। ऊर्जा स्तर सामान्य भूसे में लगभग 40 से 45 प्रतिशत होता है, लेकिन उपचारित भूसे में यह 50 से 55 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। सबसे बड़ा सुधार पाचनशीलता में देखा जाता है। सामान्य भूसे की पाचन क्षमता जहां 40 से 45 प्रतिशत रहती है, वहीं उपचार के बाद यह 70 से 75 प्रतिशत तक हो सकती है। यही कारण है कि वैज्ञानिक इसे पशुपालन के लिए बेहद उपयोगी तकनीक मानते हैं।

ऐसे करें भूसे का यूरिया उपचार

भूसे का यूरिया उपचार करना बेहद आसान है और

किसान इसे अपने घर या खेत पर ही कर सकते हैं। सबसे पहले 4 किलोग्राम यूरिया को 40 लीटर साफ पानी में अच्छी तरह घोल लें। इसके बाद लगभग 1 क्विंटल सूखे भूसे को समतल जमीन पर 3 से 4 इंच मोटी परत में फैला दें। अब तैयार घोल को स्प्रेयर या फव्वारे की मदद से भूसे पर समान रूप से छिड़कें, ताकि पूरा भूसा हल्का गीला हो जाए। इसके बाद भूसे को पैरों से दबाकर सघन करें। इसी तरह एक के ऊपर एक कई परतें बनाई जा सकती हैं और हर परत पर घोल का छिड़काव करना जरूरी होता है। अंत में पूरे ढेर को प्लास्टिक शीट से अच्छी तरह ढक दें, ताकि हवा अंदर न जा सके। गर्मियों में इसे कम से कम 3 सप्ताह और सर्दियों में लगभग 4 सप्ताह तक बंद अवस्था में रखना चाहिए। इस दौरान यूरिया से अमोनिया बनती है, जो भूसे को मुलायम और पौष्टिक बनाती है।

पशुओं को कैसे खिलाएं उपचारित चारा

जब उपचार प्रक्रिया पूरी हो जाए, तब जरूरत के अनुसार भूसे को ढेर से निकालकर उपयोग किया जा सकता है। शुरुआत में इस भूसे को लगभग आधे घंटे तक खुली हवा में फैला देना चाहिए, ताकि अतिरिक्त अमोनिया निकल जाए। इसके बाद इसे पशुओं को खिलाया जा सकता है। शुरुआत में पशुओं को थोड़ी मात्रा में यह चारा देना चाहिए, ताकि वे इसकी आदत डाल सकें। धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है। एक बार पशु इसके स्वाद के अभ्यस्त हो जाएं, तो इसे सीधे भी खिलाया जा सकता है। उपचारित भूसा सूखे मौसम में लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे पूरे साल चारे की उपलब्धता बनी रहती है। यही कारण है कि यह तकनीक छोटे और मध्यम पशुपालकों के लिए बेहद उपयोगी मानी जाती है।

चारा तैयार करते समय बरतें जरूरी सावधानियां

यूरिया उपचारित भूसा तैयार करते समय कुछ जरूरी

सावधानियों का पालन करना बेहद आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यूरिया घोल को हमेशा पशुओं और बच्चों की पहुंच से दूर रखा जाए। यूरिया को कभी भी सीधे पशुओं को नहीं खिलाना चाहिए, क्योंकि यह नुकसानदायक हो सकता है। उपचारित भूसे को कम से कम 3 सप्ताह बाद ही उपयोग में लाना चाहिए, ताकि प्रक्रिया पूरी तरह सफल हो सके।

प्लास्टिक कवर को अच्छी तरह बंद रखना जरूरी है, क्योंकि हवा अंदर जाने से उपचार प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा भूसे पर यूरिया घोल का समान रूप से छिड़काव करना भी बेहद जरूरी होता है। विशेषज्ञों का मानना है, कि यदि किसान फसल कटाई के समय ही भूसे का उपचार कर लें, तो पूरे साल पौष्टिक चारे की चिंता काफी हद तक खत्म हो सकती है। सही विधि और सावधानी के साथ अपनाई गई यह तकनीक पशुपालकों के लिए कम खर्च में अधिक मुनाफा दिलाने का प्रभावी उपाय साबित हो सकती है।

टॉप 5 डेयरी बिजनेस आइडिया: किसान करें लाखों की कमाई



कम लागत में शुरू होने वाले टॉप 5 डेयरी बिजनेस

आज के समय में डेयरी से जुड़े बिजनेस कम निवेश में

अधिक मुनाफा देने वाले साबित हो रहे हैं। दूध और उससे बने उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे यह क्षेत्र उद्यमियों के लिए आकर्षक बन गया है। खास बात यह है, कि इन बिजनेस को छोटे स्तर से शुरू करके धीरे-धीरे बड़े स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इनकी अच्छी संभावनाएं हैं। अगर आप डेयरी संबंधित व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो मेरीखेती के इस लेख में आज हम आपको पाँच ऐसे डेयरी से जुड़े व्यवसायों के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे जो आपको कम समय कम निवेश में अधिक मुनाफा देने में मददगार साबित होंगे। इन टॉप 5 बिजनेस में डेयरी प्रोडक्ट्स बिजनेस, आइसक्रीम बिजनेस, चॉकलेट बनाने का बिजनेस, दूध संग्रहण केंद्र और चारा बिजनेस शामिल है।

डेयरी प्रोडक्ट्स बिजनेस की बढ़ती मांग

दूध, दही, छाछ, घी और पनीर जैसे डेयरी उत्पाद हर घर की जरूरत हैं। इनकी मांग सालभर बनी रहती है, जिससे यह बिजनेस स्थिर आय का स्रोत बन सकता है। शुरुआत में छोटे स्तर पर उत्पादन करके स्थानीय बाजार में सप्लाई की जा सकती है। जैसे-जैसे ग्राहक बढ़ते हैं, आप उत्पादन और वितरण दोनों को बढ़ा सकते हैं।

सरकारी सहायता और सब्सिडी का लाभ

डेयरी बिजनेस शुरू करने के लिए सरकार भी कई योजनाएं चलाती है। नाबार्ड योजना के तहत डेयरी खोलने के लिए लोन पर सब्सिडी दी जाती है। सामान्य वर्ग को 25% प्रतिशत और अनुसूचित जाति/जनजाति को 33% प्रतिशत तक सब्सिडी मिल सकती है। इसके अलावा बैंक से 10 लाख रुपए तक का लोन भी उपलब्ध है, जिसके लिए एक सही प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी होती है।

आइसक्रीम बिजनेस में अवसर

आइसक्रीम बिजनेस खासकर गर्मियों में काफी तेजी

से चलता है। दूध से बनी आइसक्रीम की कई प्लेवर और वैरायटी बाजार में उपलब्ध हैं, जिससे ग्राहकों को आकर्षित करना आसान होता है। आप एक छोटा आइसक्रीम पार्लर खोलकर या मिनी प्लांट लगाकर इस बिजनेस की शुरुआत कर सकते हैं। अगर आप नए प्लेवर और ऑर्गेनिक विकल्प देते हैं, तो आपकी बिक्री तेजी से बढ़ सकती है। भारत में आइसक्रीम को बहुत बड़ी संख्या में लोग खाना पसंद करते हैं। इसलिए अगर आप आइसक्रीम का व्यवसाय शुरू करते हैं तो यह आपके लिए काफी फायदे का विकल्प साबित होगा।

चॉकलेट बनाने का लाभदायक व्यवसाय

चॉकलेट का बिजनेस भी तेजी से बढ़ रहा है, खासकर बच्चों और युवाओं के बीच इसकी लोकप्रियता बहुत अधिक है। इस क्षेत्र में बड़े ब्रांड्स के साथ-साथ छोटे लोकल ब्रांड भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। आप घर से ही चॉकलेट बनाना शुरू कर सकते हैं और धीरे-धीरे अपना ब्रांड स्थापित कर सकते हैं। इसके अलावा रॉ चॉकलेट बनाकर बड़ी कंपनियों को सप्लाई करना भी एक अच्छा विकल्प है। अगर आपने अच्छी क्वालिटी की चॉकलेट बनाकर बाजार में बेचना शुरू की तो आप काफी शानदार कमाई कर सकते हैं।

दूध संग्रहण केंद्र से कमाई

दूध संग्रहण केंद्र खोलना भी एक बेहतरीन बिजनेस आइडिया है। इसमें आप स्थानीय किसानों से दूध खरीदकर बड़ी कंपनियों को सप्लाई कर सकते हैं। इसके लिए आपको ऐसी जगह चुननी चाहिए जहां किसान और ग्राहक आसानी से पहुंच सकें। इस बिजनेस में कम कीमत पर दूध खरीदकर उसे बाजार मूल्य पर बेचकर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। यह बिजनेस कम जोखिम और अधिक मुनाफे का एक शानदार जरिया है।

चारा बिजनेस की बढ़ती जरूरत

पशुपालन के बढ़ते चलन के साथ चारे की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। खासकर गर्मियों में पशुओं के लिए हरे

चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में चारा उत्पादन और बिक्री का बिजनेस काफी फायदेमंद हो सकता है। आप लीज पर जमीन लेकर ढेंचा, जई, बरसीम, ज्वार, बाजरा और मक्का जैसी चारा फसलें उगाकर अच्छा लाभ कमा सकते हैं। पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में चारे की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अगर आप पशु को संतुलित और पौष्टिक चारा खिलाओगे तो निश्चित रूप से पशु आपकी अधिक दूध देगा। परिणामस्वरूप आपकी आय में भी वृद्धि होगी।

सफल बिजनेस के लिए रणनीति

इन सभी बिजनेस में सफलता पाने के लिए सही योजना, गुणवत्ता और मार्केटिंग बहुत जरूरी है। शुरुआत छोटे स्तर से करें, लागत को नियंत्रित रखें और ग्राहकों की जरूरत के अनुसार प्रोडक्ट तैयार करें। यदि आप सही दिशा में मेहनत करते हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हैं, तो ये बिजनेस आपको लंबे समय तक अच्छा मुनाफा दे सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की अधिकांश आबादी कृषि व पशुपालन के माध्यम से ही अपनी आजीविका चलाती है। साथ ही, भारत डेयरी संबंधित उत्पादों का एक बड़ा उपभोक्ता है। ऐसे में मेरीखेती के इस लेख में बताए गए डेयरी संबंधित टॉप 5 व्यवसाय आपके लिए एक बेहतर आय का जरिया साबित हो सकते हैं। उपरोक्त टॉप 5 कृषि व्यवसायों को कर आप काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। आप अपने क्षेत्र, रूची और बजट के अनुरूप व्यवसाय का चयन कर शुरू कर सकते हैं।

मेरीखेती किसान पंचायत अगस्त 2026: जैविक खेती से विकसित भारत



सम्पादकीय

मेरीखेती किसान पंचायत अगस्त 2026



मेरीखेती किसान पंचायत अगस्त 2026 में क्या हुआ?

मेरीखेती किसान पंचायत अगस्त 2026 का भव्य आयोजन नोएडा स्थित नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में डॉ गंगणेश जी की अध्यक्षता में संपन्न किया गया। मेरीखेती किसान पंचायत का मुख्य विषय जैविक कृषि से विकसित भारत रहा। मेरीखेती किसान पंचायत में पूसा के अनुभवी कृषि वैज्ञानिक डॉ विपिन कुमार और डॉ मोनिक शर्मा भी मौजूद रहीं। साथ ही, अमित नंबरदार, अवतार नंबरदार, मिंटू नागर, पवन नागर, संदीप कुमार, सुखबीर भाटी और रोहित अवाना आदि बड़ी संख्या में प्रगतिशील किसान मौजूद रहे। अब आगे हम इस लेख में जानेंगे कि मेरीखेती किसान पंचायत में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा "जैविक खेती से विकसित भारत 2047" जैसे महत्वपूर्ण विषय पर किसानों को क्या संबोधित किया।

मेरीखेती किसान पंचायत के मुख्य केंद्र बिंदु:- विकास में जैविक खेती की भूमिका

विकसित भारत का लक्ष्य केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वस्थ नागरिक, समृद्ध किसान, स्वच्छ पर्यावरण और मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी शामिल हैं। जैविक खेती इन सभी क्षेत्रों को एक साथ मजबूत करने की क्षमता रखती है। इसके लिए किसानों को प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीक, गुणवत्तापूर्ण जैविक इनपुट, उचित बाजार और बेहतर मूल्य उपलब्ध कराना आवश्यक है। यदि सरकार, किसान, वैज्ञानिक और उपभोक्ता मिलकर जैविक खेती को बढ़ावा दें, तो यह आत्मनिर्भर, स्वस्थ और पर्यावरण-संतुलित विकसित भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

जैविक खेती की आवश्यकता

जैविक खेती भारत की कृषि व्यवस्था को अधिक टिकाऊ, सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के बजाय प्राकृतिक खाद, जैविक उर्वरक और पारंपरिक कृषि

पद्धतियों को अपनाया जाता है। इससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और खेती की गुणवत्ता में सुधार होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जैविक खेती किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ स्वस्थ समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मिट्टी और पर्यावरण संरक्षण

जैविक खेती का सबसे बड़ा लाभ मिट्टी और पर्यावरण का संरक्षण है। रासायनिक खादों और कीटनाशकों के लगातार इस्तेमाल से मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा जल और पर्यावरण प्रदूषित हो सकते हैं। जैविक खेती में गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद और जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। इससे मिट्टी में जैविक पदार्थ बढ़ते हैं और उसकी प्राकृतिक उर्वरता मजबूत होती है। साथ ही, जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

किसानों की आय बढ़ाने में योगदान

जैविक खेती किसानों के लिए आय का बेहतर अवसर पैदा कर सकती है। जैविक उत्पादों की मांग देश और विदेश में लगातार बढ़ रही है। उपभोक्ता स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने के कारण फल, सब्जियां, अनाज, दालें और मसालों जैसे जैविक उत्पादों को प्राथमिकता दे रहे हैं। यदि किसानों को उत्पादन, प्रमाणन, भंडारण और बाजार से जोड़ने की उचित व्यवस्था मिले, तो वे अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।

स्वस्थ समाज की दिशा में कदम

स्वस्थ नागरिक विकसित भारत की सबसे बड़ी ताकत हैं। जैविक खेती से उत्पादित खाद्य पदार्थों में रासायनिक अवशेषों का जोखिम कम करने में मदद मिल सकती है। पौष्टिक और सुरक्षित भोजन लोगों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। इसके अलावा, जैविक खेती पर्यावरण को स्वच्छ रखने में योगदान देती है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध

रहेंगे। इस प्रकार जैविक खेती केवल किसानों की नहीं, बल्कि पूरे समाज के स्वास्थ्य और कल्याण से जुड़ी हुई है।

रोजगार और ग्रामीण विकास को बढ़ावा

जैविक खेती ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर सकती है। जैविक खाद निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट, बीज उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और जैविक उत्पादों के विपणन जैसे क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर रोजगार बढ़ सकता है। किसान समूह, स्वयं सहायता समूह और कृषि उत्पादक संगठन मिलकर जैविक उत्पादों की ब्रांडिंग और बिक्री कर सकते हैं। इससे गांवों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी और ग्रामीण युवाओं को कृषि आधारित व्यवसाय शुरू करने के अवसर मिलेंगे।

आलू किसानों के लिए खुशखबरी: कोल्ड स्टोरेज में आलू रखने पर मिलेगी छूट



भंडारण शुल्क में मिलेगी बड़ी राहत

उत्तर प्रदेश सरकार ने आलू किसानों को राहत देने के लिए भंडारण शुल्क में ₹1 प्रति किलोग्राम की छूट

देने का फैसला किया है। उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के मुताबिक, इस छूट की राशि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के माध्यम से सीधे किसानों के बैंक खातों में भेजी जाएगी। सरकार ने इस योजना के लिए ₹1,000 करोड़ का बजट प्रावधान किया है। इस कदम से किसानों पर कोल्ड स्टोरेज में आलू रखने का आर्थिक बोझ कम होगा और उन्हें अपनी उपज को जल्दबाजी में कम कीमत पर बेचने की मजबूरी से राहत मिल सकती है।

भावांतर भुगतान से भी आर्थिक मदद

आलू की कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव से किसानों को होने वाले नुकसान को कम करने के लिए सरकार ने भाव स्थिरता कोष का भी प्रावधान किया है। इसके तहत पात्र किसानों को ₹1.50 प्रति किलोग्राम की दर से भावांतर भुगतान किए जाने की योजना है। इसके लिए ₹100 करोड़ का बजट रखा गया है। सरकार के अनुसार भुगतान सीधे किसानों के बैंक खातों में किया जाएगा। इसका उद्देश्य बाजार भाव में गिरावट आने की स्थिति में किसानों को आर्थिक सुरक्षा देना और उनकी आय को स्थिर रखने में मदद करना है।

खेत से बाजार तक मार्केटिंग पर जोर

उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि सरकार आलू किसानों की समस्याओं को केवल उत्पादन तक सीमित नहीं मानती। भंडारण के साथ-साथ फसल की बिक्री और बाजार उपलब्धता भी किसानों के लिए बड़ी चुनौती है। इसी को ध्यान में रखते हुए विभाग ने चालू वर्ष में फसल खेत में रहते ही आलू के लिए नए बाजार तलाशने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। सरकार का जोर ऐसी मार्केटिंग व्यवस्था तैयार करने पर है, जिससे किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए बेहतर विकल्प मिल सकें और उन्हें उचित कीमत हासिल हो सके।

ओडिशा में खरीदारों से संपर्क

उत्तर प्रदेश के आलू के लिए दूसरे राज्यों में बाजार तलाशने की दिशा में 30 जनवरी 2026 को भुवनेश्वर

में क्रेता-विक्रेता सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसमें उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने ओडिशा के उप मुख्यमंत्री और कृषि मंत्री के साथ किसानों तथा कारोबारियों से बातचीत की। सम्मेलन का उद्देश्य ओडिशा में उत्तर प्रदेश के आलू की आपूर्ति बढ़ाने और किसानों के लिए बेहतर बाजार उपलब्ध कराने की संभावनाओं पर चर्चा करना था। सरकार की कोशिश है कि प्रदेश की आलू उपज को दूसरे राज्यों में भी मजबूत बाजार मिले।

दूसरे राज्यों में भी बाजार की तलाश

उद्यान विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी अलग-अलग राज्यों का दौरा कर वहां आलू की बिक्री और आपूर्ति की संभावनाओं का आकलन किया है। सरकार का मानना है कि दूसरे राज्यों में बाजार मिलने से किसानों के पास अपनी फसल बेचने के अधिक विकल्प होंगे। इससे स्थानीय बाजारों पर दबाव कम करने और मार्केटिंग व्यवस्था को मजबूत करने में मदद मिल सकती है। सरकार उत्पादन, भंडारण और बिक्री से जुड़ी चुनौतियों को एक साथ दूर करने की दिशा में काम करने का दावा कर रही है।

किसानों से योजनाओं की जानकारी लेकर निर्णय की अपील

उद्यान मंत्री ने कहा कि पिछले नौ वर्षों में आलू किसानों की उत्पादन, भंडारण और मार्केटिंग से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए लगातार प्रयास किए गए हैं। सरकार का लक्ष्य किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना और बिक्री के लिए बेहतर बाजार उपलब्ध कराना है।

मंत्री ने किसानों से अपील की कि वे सरकार की योजनाओं और फैसलों की सही जानकारी हासिल करने के बाद ही कोई निर्णय लें। साथ ही किसान हित से जुड़े लोगों से योजनाओं को और बेहतर बनाने के लिए सुझाव भी मांगे गए हैं।



किसानो की बात मेरी खेती के साथ



www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501

Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010